''नाथद्वारा''

सचित्र

पुष्टिमार्गीय सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशकः **Vibrant Pushti** - Vadodara

मुद्रक : Jayesh Printery - Vadodara

संस्करण : प्रथम – २०१७

न्योछावर : १३० =००

प्रकाशक एवं पुष्टि विचारक

Vibrant Pushti

५३, सुभाषपार्क, संगम चार रस्ता

हरणी रोड, बड़ौदा – ३९०००६

गुजरात – भारत

E-mail : vibrantpusti24@gmail.com

Mobile : +91 9327297507

''नाथद्वारा''

यह शब्द की रचना क्या क्या अर्थ करता है, क्या क्या संकेत करता है, क्या क्या सामर्थ्यता जता रहा है ?

सच कहे तो अब यह पुष्टि मार्ग संप्रदाय को समझना चाहिए और पुष्टिमार्ग धारण किए हर व्यक्ति को, पुष्टिमार्ग के पुष्टि तत्व को खुद में उजागर करना चाहिए । पुष्टिमार्ग के व्यक्तित्व की जागृतता और कर्तव्यता निभा कर श्री प्रभु सेवा समर्पित करनी ही योग्य है ।

आप सबको विदित करता हूँ की यह स्थली क्या है ?

हम पुस्तकें पढते है, प्रवचन सुनते है, यात्रा करते है, दर्शन करते है, मनोरथ करते है, दान दक्षिणा प्रदान करते है, विनंती करते है, प्रार्थना करते है, मान्यता पूर्ण करते है, पवित्रता पाते है, एकरार करते है, भक्ति करते है, शिक्षा पाते है, संस्कार सिंचते है, संस्कृति स्पर्श करते है, खुद में कुछ परिवर्तन करते है और सेवा करते है । तो ऐसे ही स्थली का माहात्म्य और स्पर्श पाना अति आवश्यक है ।
क्या यह स्थली की योग्यता, सत्यता, संपूर्णता, सर्वोच्चता, संतता समझना और पहचान कर खुद को पुष्टि सेवक या दास प्रस्थापित करना हमारी साक्षरता, सभानता नहीं है ? हमारी मानव सैद्धांतिकता नहीं है ?
हमारी संस्कृति सदा उत्कृष्ट रहे वह सभ्यता, सुढ़डता, नैतिकता नहीं है ?

''नाथद्वारा'' कितना अनोखा शब्द रचा है –

नाथ + ध्वार + अ = नाथद्वारा ।

''नाथद्वारा'' जगत में यह एक ऐसी स्थली है जिसे

''नाथद्वारा'' कहते है ।।

नहीं था नाम पहले !

नहीं था गाँव पहले !

नहीं था बसेरा पहले !

नहीं था आँगन पहले !

नहीं था आशियाना पहले !

नहीं था व्यक्ति पहले !

नहीं था गीत पहले !

नहीं था संकीर्तन पहले !

नहीं था उत्सव पहले !

नहीं था मनोरथ पहले !

नहीं थी गूँज पहले !

नहीं थी पुकार पहले !

नहीं थी विनंती पहले !

नहीं थी पुष्टि रज पहले !

नहीं थी पुष्टि धून पहले !

नहीं थी पुष्टि सृष्टि पहले !

आज क्या है ?

''नाथद्वारा''

''नाथ'' के लिए द्वार !

''नाथ'' का द्वार !

''नाथ'' का सृष्टि द्वार !

''नाथ'' का जगत द्वार !

''नाथ'' का संसार द्वार !

''नाथ'' का धरती द्वार !

''नाथ'' का पृथ्वी द्वार !

''नाथ'' का पुष्टि द्वार !

''नाथ'' का मिलन द्वार !

''नाथ'' का भक्तों द्वार !

''नाथ'' का प्रित द्वार !

''नाथ'' जो सदा रमणीयता से सर्वे ब्रह्मांड का निरोध करे !

''नाथ'' जो सदा मधुरता से प्रकृति का संतुलन करे !

''नाथ'' जो सदा योग्यता से हर तत्व का नियमन करे !

''नाथ'' जो सदा जगत के हर दोष को मिटा कर
जगत सलामत करे !

''नाथ'' जो सदा सृष्टि सर्जन में समांतरता की केलवनी
या संयोजन करे !

''नाथ'' जो सदा हर अंश को खुद की पहचान के लिए धर्म संस्थापन करे !

''नाथ'' जो सदा आनंद की अनुभूति कराये !

''नाथ'' जो सदा जीव तत्व को कर्म का सिद्धांत शिखाये !

''नाथ'' का अर्थ होता है सर्वस्व !

''नाथ'' का अर्थ होता है पति !

''नाथ'' का अर्थ होता है स्वामी !

''नाथ'' का अर्थ होता है आध्यपति !

''नाथ'' का अर्थ होता है प्रियतम !

''नाथ'' का अर्थ होता है रखवाला !

''नाथ'' का अर्थ होता है अयोग्यता को नाथ ने वाला !

''नाथ'' का अर्थ होता है मार्ग सिंचन करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है जागृत करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है सलामत करनार और रखनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है जीवन घडनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है तनुनवत्व परिवर्तन करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है पाप संहारक !

''नाथ'' का अर्थ होता है अविधा नष्ट करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है सुरक्षित करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है संस्कृत करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है सदा साथ निभानार !

''नाथ'' का अर्थ होता है सदा स्पर्श करनार !

''नाथ'' का अर्थ होता है प्रीत जतानार !

''नाथ'' का अर्थ होता है आत्म से आत्मा जुडनार !

''द्वार''

इतना गूढ और मार्मिक शब्द है

जो समझे तो बहुत कुछ खुलता है ।

''द्वार'' एक मर्यादा

''द्वार'' एक संस्कृति

''द्वार'' एक नियम

''द्वार'' एक अलगता

''द्वार'' एक साधन

''द्वार'' एक उपाय

''द्वार'' एक योग्य स्थान

''द्वार'' एक एसा छिद्र

''द्वार'' एक आंतर पट

''द्वार'' योग्य आवरण

''द्वार'' योग्य अवरोधक

''द्वार'' योग्यता खुलने का मार्ग

''अ''

''अ'' एकात्मकता

''अ'' योग्य अनुशासन

''अ'' योग्य बंधन

''अ'' योग्य निवेदन

''अ'' योग्य रक्षक

''अ'' योग्य ज्ञान वर्धक

''अ'' अतूट भाव वर्धक

''अ'' आज्ञा प्रदान करनार

''अ'' पवित्र

''अ'' सदा अभिन्न

''अ'' प्रथम

''नाथद्वारा'' का सैद्धांतिक और विशिष्ट अर्थ है सर्वाधिक, सर्वोच्च, सर्वोत्तम, सुशासन, विशुद्ध, अलौकिक प्रीत वर्धन, साक्षर सिंचन स्थली ।

सदा धर्म संस्थापन बसे
न्यायिक नियमन कर्म हो
सर्वे सलामत रहे
निर्भयता हर एक में जागे

ऐसा कैसे समझे ?

''नाथद्वारा'' में बसा है गोलोक धाम और गोलोक धाम के मुख्य द्वार पर बसे है परम भगवदीय ऋषि गण । ज़ो नित्य सृष्टि सर्जन और प्रकृति समवृष्टि में कार्यरत रहते है। यह ऋषि शृंखला में सप्तर्षि का प्रथम सन्मान है। उनके सामने बिराजमान है उनकी आत्मीय सती रूप धर्मपत्नियाँ जो सदा अपनी पतिव्रता सेवा में मग्न रहती है, जो सृष्टि और प्रकृति को संस्कार रस से सिंचित करती रहती है ।

''नाथद्वारा'' में बसा है ब्रह्मांड के नाथ और उनके साथ बसे है उनका सारा कुटुंब, गोपिकाओं, भक्त वत्सल, ब्रह्मश्री, महर्षि, तपस्वियों, मुनियों, ऋषि गण, आचार्यो, व्रजवासीयों, गौकामधेनुओं, सलिल सरिताओं, गिरिशिखरों, वन उपवन, तनुनवत्व वनस्पतियों, कल्लोल पंखीयों, पशुओं, किटकों आदि सर्वे बिराजमान है ।

अग्नि, जल, वायु, आकाश, और धरती के साथ उनके हर गण बसे है, जो सदा ब्रह्मांड को समतल रखते है ।

नाथद्वारा के परकोटा से बाहर बसी हुई बस्ती है जो धीरे धीरे वैष्णव हो कर परकोटा के अंदर बसे हुए सैव्य वैष्णवों के साथ संमिश्र होते रहते है । यह बसे हुए आत्म जनों अपना सांसारिक निर्वाह करने व्यापार करते है वह व्यापार जीवन के कहीं ऐसे सिद्धांत से करते है, जिसमें वह सदा वह जागृत रहते है कि कहीं कोई अपराध या दोष न पड जाये जिससे वह अगले कर्तव्य निष्ठ जन्म में नाथद्वारा के बाहर जन्म न धारण करना पडे ?

क्यूँकि यहाँ पधारते हर आत्म जन एक एसा आत्म तत्व है जो सदा अपने धर को गोकुल और गृह सेवा में गोलोक धाम रचाया होता है,

अगर कोई भी सामान्य अपराध या दोष किसीको भी यह नाथद्वारा से बाहर धकेल सकता है ।

टिप्पणी – यह गहरा सत्य है और आप सब यह सत्य निहाल भी सकते हो और अनुभव भी कर सकते हो कि कितने एसे आत्म जनों है जो नाथद्वारा उनकी कर्मनिष्ठ भूमि है पर वह यह भूमि छोड चूके हैं, यह भूमि का माधुर्य स्पंदन खो चूके है और केवल भौतिकता के पीछे लगे रहते है और सत्य प्रीत सेवा से दूर है और जब यहां आते है तो केवल आडंबर भरे, अविद्या भरे, सेवा प्रीत खोये अपने यह जन्म को द्वैत करके सदा जगत मंडल में खो जाते है, चाहे वह कोई भी कुल के हो, उनकी अहंता ममता ही उन्हें अपना अस्तित्व भूला देती है ।

यहाँ ऐसे ही आत्म जन यहां पधारते है, जिनमें एक निष्ठा और विश्वास होता है की मैं श्री प्रभुके पास पहूँचा हूँ, अगर जो यहाँ एसे जीव तत्व आते है जिसमें केवल आडंबर है, लोभ है, मोह है, और ये सबसे मैं धन्य हो रहा हूँ, यहाँ से ये ले जाउंगा, यह खाउँगा, यह पीउँगा, एसा करुँगा वैसा करुँगा तो श्री प्रभु की कृपा बनी रहेगी ।

गलत ! बिलकुल गलत ! कैसी भ्रमणा – कैसी मान्यता !

नाथद्वारा को जानना, समझना और पहचानना अति आवश्यक और योग्य सभर है ।

जो समझते है वह क्या पाते है ?

जो समझते है वह क्या स्पर्श करते है ?

जो समझते है वह क्या अनुभव करता है ?

जो समझते है वह नाथद्वारा को कैसे रखते है ?

जो समझते है वह खुद में क्या परिवर्तन करते रहते है ?

यहाँ रहते हुए कहीं आत्म जन कहते रहते है की मेरे पूर्वजो यह थे, ऐसे जीवन जीते थे और एसी अनुभूति करते थे, वैसे ही यहा यात्राळु हो कर पधारते है वह भी अपने पूर्वजों की जीवन चर्या और अनुभूति की बातें करते रहते है, खुद को धन्य और अपने कुटुंब, वंश और पूर्वजो को भी धन्य करते है ! यही तो पुष्टिनिधि की विशिष्टता है ! कितना अदभूत !

''नाथद्वारा''

नाथद्वारा हमारा विश्वास है
नाथद्वारा हमारा पुरुषार्थ है
नाथद्वारा हमारी निष्ठा है
नाथद्वारा हमारी संस्कृति है
नाथद्वारा हमारा सामर्थ्य है
नाथद्वारा हमारा प्रारब्ध है
नाथद्वारा हमारी शक्ति है
नाथद्वारा हमारी भक्ति है
नाथद्वारा हमारा जीवन है
नाथद्वारा हमारा धर्म है
नाथद्वारा हमारी कृति है
नाथद्वारा हमारी सृष्टि है

''नाथद्वारा'' कैसा है ?

नाथद्वारा एक एसी स्थली और धरती थी जहां चारों ओर जंगल, वन उपवन और पर्वतें थी, यह स्थली इतनी अवावरु और बिहावड थी की यहाँ कोई आना जाना पसंद ही न करे । जब मौगल राजा – सेनापति – सुबेदार – सैन्य ने सारे हिन्दुस्थान में आतंक फैलाया तब हर धर्म – धर्म स्थली – धर्म मंदिर – धर्म विग्रह – धर्म संप्रदाय को अति कठिनाई और धर्म परिवर्तन का सामना करना पडा तब अपने धर्म और संस्कृति और धर्म सभ्यता की रक्षा करने कहीं दूर भागना पडा, भटकना पडा, तब स्वयं प्रकट ''श्री गोवर्धननाथजी'' को भी जतीपुरा से या ने गोपालपुरा से यह सिहाड स्थली तक सुरक्षित लाना पडा ।

धन्य है ऐसे अखंड़ भक्ति संधान, ज्ञान – प्रज्ञान और धर्म संस्थापकों, धर्म आचरणों को, धर्म परायणकों, धर्म रक्षकों को जो खुद की परवाह के बिना खुद को न्योछावर कर हर कठिनाई, ...खुदको योग्य रखकर ''श्री प्रभु'' के रक्षा काज – उज्जवल भविष्य के लिए, भविष्य के जीवतत्व – आत्म तत्व को उजागर करने, योग्यता का सिंचन करने, श्री प्रभु को यह सलामत स्थल तक पधराया जो आज के हर जीव तत्वों को योग्य शिक्षा प्रदान की है ।

प्रणाम है !

वंदन है ! शत् शत् नमन है !

धन्य है हम की हमारे पूर्वजों ऐसे थे ।

ताद्सी वैष्णव जो खुद को योग्य करके पुष्टि भक्ति की नींव को इतनी गहराई में प्रस्थापित करते है की वह नीव कभी अस्थिर न हो ! वाह ! आज भी हम उन्हें याद करके, उनसे हम शिक्षा पाते है, धैर्यता जगाते है,

ऐसे होने का संकल्प करते है ।

उस समय हर व्यक्ति समान और योग्यता पूर्वक सबसे व्यवहार और सभ्यता निभाते थे । जो हम बार बार चौरासी वैष्णव की वार्ता में पढते है और समझते है कि उस समय '' श्री वल्लभाचार्यजी'' अपने शिष्य और अनुयायी के साथ एक सामान्यत मानव की तरह जीते थे, रहते थे और व्यवहार करते थे । ''श्री वल्लभाचार्यजी'' ने कभी खुद को श्री प्रभु के अवतार या खुद ही प्रभु है एसा कभी नहीं समझाया था और माना था ।

उस समय के राजा, प्रजा, आचार्यवर और भक्त गण अति द्रड और स्थिर मनोबल वाले थे, तब ही आज हम ''श्री श्रीनाथजी'' का सानिध्य और सामीप्य पा सकते है ।

वैष्णव मार्ग की प्रखर ज्योत से प्रकट हुए श्री वल्लभाचार्यजी जब विद्या अभ्यास कर रहे थे तब से उनके तन मन और आत्म में प्रबल जिज्ञासा जागी थी, ''श्री कृष्ण चरित्र'' के लिए ।

यह प्रखर परम आत्मीय तत्व ने खुद को इतनी सूक्ष्मता से तैयार किया कि वह ब्रह्मांड के हर तत्व को पहचानने लगे और हर तत्व का परिणाम क्या है ? परिवर्तन क्या है ? यह पहचान लगे थे

उस समय जो जीव जन जैसे जीते थे, जो जो समझ कर अपना जीवन बिता रहे थे वह उनसे अति व्यथित हुए और बार बार चित्कार और चिंतन करते रहते थे की मानव जीव का उत्थान कैसे हो ? मानव कहीं अंधश्रद्धा में डूबे थे, व्यभिचारी थे, दिशा हीन थे, भटके हुए थे और असाक्षर थे, जिससे वह सदा दुःखी रहते थे ।

जैसे उन्होंने प्रथम परिक्रमा का आरंभ किया तब उन्होने हर जीव तत्व बिना सोच, समझ और दूसरे का अर्थ अनर्थ, दोष, पाप, अविधा से जी

रहे थे यह गहराई से समझ कर कुछ करने का संकल्प किया और वह दृडता से कहीं रचनात्मक क्रिया करने लगे । यह क्रिया में वह ''श्रीमद् भागवत'' का अनुसंधान से अपना कार्य आरंभ किया और सूक्ष्मता से जीव तत्व को जागृत करने लगे ।

यही जागृतता ने श्री वल्लभ को परम कक्षा पर प्रस्थापित कर दिया, क्यूँकि वह हर ज्ञान में पंडित थे, वेद, उपनिषद, और अनेक सूत्रों में प्रज्ञानी थे, जिससे ब्रह्मांड के हर तत्व को पहचानते थे, यही पहचान से उन्होंने जगत के कहीं जीवो का उद्वार करके, योग्य शिक्षा, संस्कार और सिद्वांत प्रदान करके मानव में तनुनवत्व जागृत किया जिवन परिवर्तन किया, जिसमें न आडंबर था, न अहंता थी, न ममता थी । केवल सत्य की उजागरता थी । यही रीत के परिभ्रमण में उन्होंने संकेत पाया गोवर्धन पर्वत से – हे वल्लभ ! मैं यहां गोवर्धन में प्रकट हो चूका हूँ, आप यहां आकर मेरा योगदान प्रतिष्ठित करे ।

यह एक अलौकिक समझ है, पहचान है ।

''गिरिकंदरा में बसे मेरे भगवंत''

यह एक आत्म बल है

यह एक आत्म विश्वास है

यह एक आत्म सिद्धि है

यह एक परिवर्तन की परिभाषा है जो केवल विशुद्धता से प्रकट होती है – जो श्री वल्लभ में यह सर्वत्र व्याप्त था । यही व्याप्तता को लीला में परिणिमित करने से सत्य प्रकट होता है और वह सत्य है

'' श्री गोवर्धननाथजी''

हम सब यह लीला से विदित है कि ''श्री यमुनाजी'' श्री यमुनाजी के

ठकुरानी घाट और गोविंद घाट पर जब श्री वल्लभ पहुंचे थे तब और एक रात ''श्री गोवर्धननाथजी'' श्री वल्लभ को ब्रह्म संबंध दिक्षा रीत और पुष्टि मार्ग प्राकट्य प्रस्थापित्ता की गुढता और अखंड और अदभ्त रहस्य जताने प्रकट हुए थे । यह लीला का अद्भूत रहस्य है ।

''श्री वल्लभाचार्यजी'' ने रची हुइ निधि अलौकिक और सर्जनात्मक लीला की अद्भूत श्रुति और कृति है, जिससे हर जीव तत्व को खुद की पहचान करके परब्रह्म से जुडने की निराली पुष्टि है ।

आज हम उन्हें पाठ समझते है – नहीं नहीं यह पाठ नहीं है, यह शिक्षा है – समझ है – योग्यता है । हर एक अक्षर उर्जा है, हर एक अक्षर ज्ञान है, हर एक अक्षर भाव है, हर एक अक्षर सिद्धि है ।

''नाथद्वारा'' क्या है ?

परकोटा से लेकर हर दरवाजा, हर बारी, हर गली, हर पोल, हर प्राण प्रतिष्ठा में ज्ञान और प्रीत रस भरा है ।

''प्रमुख द्वार''

जो द्वार से खुलने से असंख्य रज, असंख्य भाव, असंख्य तीव्रता, असंख्य विरह की घडी, असंख्य संकल्प, असंख्य इंतजार की रीते, असंख्य तडपन, असंख्य साँसें, असंख्य फरियादे, असंख्य मनोबल दौडता है

अपने परम प्रियतम को मिलने,
अपने परम प्रियतम को झाखने,
अपने परम प्रियतम को नैनन से छूने,
अपने परम प्रियतम को दंडवत करने,
अपने परम प्रियतम को अपना सर्वस्व लूटाने,
अपने परम प्रियतम को अपना प्यार जताने,
अपने परम प्रियतम को दिल की रीत सुनाने,
अपने परम प्रियतम के नैन से नैन मिलाने,

''मुख्य द्वार'' सदा अपनी सेवा से अविचलित है, जो यह जता रहा है की सेवा सदा अडग और अतूट होनी चाहिए । मुझे पता है की मैं जिसका द्वार हूँ वह सदा सलामत और निर्विध्न है । पर मुझे यहां रखा है मेरे द्वार से पसार होते हर जीव तत्व का दोष और अनित्यता का हरण करलु जिससे वह निज धाम में पहूँचते आनंद विभोर हो जाय ।

प्रमुख द्वार से आगे एक पट्टागण है यह पट्टागण आश्रम की तरह है, यहां

प्रमुख द्वार

मुख्य द्वार
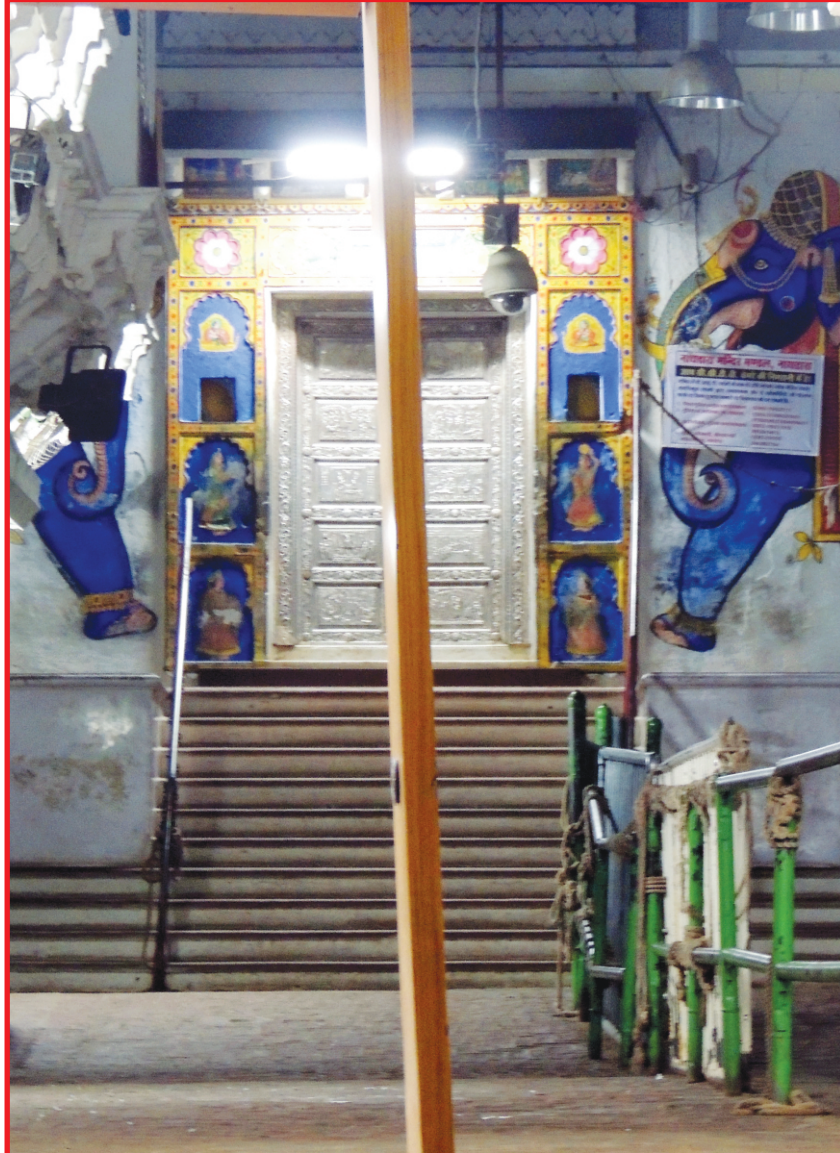
गोवर्धन चोक

पट्टागण

पधारते हर जीव तत्व को शांत और उमंग सभर कर देता है यहां जीव तत्व संसार या जगत को भूल कर केवल श्री प्रभु के शरणागत होने अपना तन मन और धन सुढ्ड करता है ।

पट्टागण से उपर चढते एक सूक्ष्म तपास द्वार है, यह द्वार हर जीव तत्वों की सूक्ष्मता से तपास करते है – शायद कोई संसार डगरिया या दोष डगरिया या पाप डगरिया तन मन और धन में रह गई हो तो यहां दूर हो जाती है । अब जीव तत्व निर्मल, निर्मोही, निष्कपट, निस्संदेह, निस्वार्थ, निस्कलंक हो जाता है, केवल शुद्ध हो जाता है ।

गोवर्धन चोक

यह द्वार से आगे एक पट्टागण के साथ निज हवेली का मुख्य द्वार है । यह पट्टागण में अपने तन मन और धन की न्योछावर सेवा साधन है, जैसे किसीको दूग्ध सामग्री, फूल सामग्री, शाकभाजी सामग्री, फल सामग्री सिद्ध होती है, जो केवल श्री प्रभु सेवा अर्थे ही उपयोगी और उपभोगी है ।

यहां तन मन धन बहुत तडपते है, क्यूँकि विरह की सीमा तूटने का समय नजदीक आ रहा है । यहां केवल एक ही लक्ष्य रहता है –

श्री प्रभु मिलन– श्री प्रभु दर्शन ।

नैन बार बार मुख्य द्वार पर टिकी रहती है कब खुले ? कब खुले ? कब खुले ? गोवर्धन चोक से मुख्य द्वार का अंतर कहीं जुगो जुगो जैसा लगता है,गोवर्धन चोक से मुख्य द्वार कहीं जन्मों का फासला लगता है, गोवर्धन चोक से मुख्य द्वार तकते तकते कहीं मानसिक, शारीरिक और आत्मीय परिस्थितियां चित्रपट समान नयन समक्ष चलती चलती – कैसे जीये तुम बिन, कैसे रहे तुम बिन,

अब तो रहा न जाय ! मेरे श्री नाथ! मेरे सांवरा ! मेरे कृष्णा !

अब तो रहा नहीं जाय !

हे मेरा नाथ !

इतने में हेलो उठयो !

श्री गिरिराज धरण की जय !

श्री नाथजी बावा की जय !

श्री गोवर्धन नाथजी की जय !

हेलो सुनते ही तन स्थिर हो गया

मन शांत हो गया

आत्म उछलने लगा

तन मन धन एक ही सूर गाने लगे

''श्री कृष्ण शरणं मम् ।''

''श्री कृष्ण शरणं मम् ।''

''श्री कृष्ण शरणं मम् ।''

मुख्य द्वार खुला !

तन दौडने लगा

मन तरसने लगा

आत्म तडपने लगा

नयन ढूँढने लगा

नयन की दृष्टि में प्रियतम आते ही

आनंद विभोर हो गया

नयन अपलक हो गये

साँसे थम गयी

तन स्थिर हो गया

मन चूप हो गया

आत्म जोरों से धडकने लगा

क्यूँकि अंशी के समक्ष अंश

दिल क्यूँ नही धबके

ओहहह ! मेरे श्री प्रभु !

नयन बरसने लगे

तन थरराने लगे

मन बार बार दंडवत करने लगा

आत्म आत्म तेज पुंज से परम आत्मा से जुडने लगे ।

तकते ही रहे तकते ही रहे

नयनों से दिल में बसाते ही गये

न नयन थके न तन थका

न मन थका न साँस थकी

यहां बसाया वहां बसाया

तन मन धन के हर पहलू में बसाया

विचार में बसाया स्वर मे बसाया

कर्म की हर गति में बसाया

बसाते बसाते वह मेरे हो गये

ऐसे बसे के मेरी दृष्टि जहां वो वहां

दंडवत करते उनसे बाते करते करते मेरा डग

''श्री नवनीतप्रियाजी'' के सामने रुक गये ।

ओहहह ! मेरे श्री वल्लभ के प्रभु !

कितने मनोहर, कितने लाडले !

श्री लाडले लाल की जय !

झुले में झुलते खिलौने से खेलते
शृंगार सजते हाथ में लकुटी पकडके
बंसी बजाके मोर पंख लगाके
बिराजे थे मेरे बालकृष्ण मुखडा मलकाके
आरत उतारत नैन मटक मारत
नटखट खेले माखन ठोर लूटावत
नवनीतप्रिया से नव नव नीत नीत पाये
हस्त में माखन हर हर को लूटाये
शीर पर मयूर पाध पहनत
भाल पर केसर तिलक सोहावत
नाक पर नकवेसर चुनी चिपकावत
कंठ में वैजयंती माला सजावत
गले में तुलसी माला जगावत
तन पर रेशमी धोती बंडी धारत
हाथ में मोती सजी बंसी थानत

पग में छुम छुम पायल बांधत

ऐसे है मेरे नटखट नंद किशोर !

सेवा की रीत जगायी श्री वल्लभ

सेवा की प्रीत जगायी

नैन से जागा संकल्प सुहाना

दर्शन करत करत मन जगाना

जागते जागते सेवा अंग बिखरायी

श्री वल्लभ सेवा की कंठी बंधायी

श्री नवनीतप्रिया थाडु स्वरुप पधराई

पहूँचे श्री वल्लभ वैठकजी सुहाई

''श्री वल्लभाधिश की जय''

ओहहह !

मेरे जीवन के मार्ग दर्शक

मेरे जीवन के योग्य सिंचक

मेरे तन मन धन के मुख्य दंडक

मेरे रोम रोम के पुष्टि वर्धक

मेरे तनुनवत्व के सर्वोच्च धारक

मेरे विचार कर्म के वाचक

मेरे जन्मों जन्म के नायक

''श्री वल्लभाचार्यजी'' की वैठकजी चरण चोकी पर पहूँचे, दंडवत प्रणाम करके उनके सानिध्य में बैठे । कितनी शांतता, नीरवता, शुद्धता,

पवित्रता । श्री वल्लभ बिराजते थे यहां और यहाँ से श्री नाथजी के हर शमा के दर्शन आरती की आज्ञा करते थे। यह स्थली पर ही श्री वल्लभ सदा अपनी श्री सुबोधिनी कथामृत पान करावते थे ! यही से ही उन्होंने कहीं पुष्टि प्रणाली प्रसिद्ध करी थी।

कभी भी कहीं भी सेवा कार्य या दर्शन आरती करो – पहले श्री वल्लभ की आज्ञा पाना अपना भाव और ज्ञान को आनंद में परिवर्तित करना होता है ।

यहां ही ''द्रढ इन चरनन केरो भरोसो'' अद्‌भूत !

जिसकी श्री वल्लभ सदा सेवा में तत्पर रहते थे वह दोनों निधि स्वरुप का स्पर्श हमने पाया ।

यही स्पर्श पाते ही अपने नयन पहूँचे ''श्री ध्वजाजी'' पर जो सदा पुष्टि लहर लहराते – रंग रंग भाव बरसाते ।

सुदर्शन चक्र सजावत रंग रंग प्रेम ध्वजा लहरावत ।

कितनी नजाकत, कितनी सजावट, कितनी मुलायम ध्वजा हर एक की पुष्टि सुधा प्यास मिटाता है ।

पुष्टि मार्ग की अद्‌भुत प्रणाली में निज धाम एक ऐसी स्थली है जहां श्री प्रभु के हर निज सेवक की भी हर एक प्रकार की जीवन व्यवस्था होती है । यहां ही श्री प्रभु के लिए हर भंडार सामग्री, पहनावा, शृंगार, आभूषण, भोजन, पाक, स्नान घर, जल धर, फूल घर, फल घर, शाक घर, दूग्ध घर, शैया गृह आदि और इत्यादि सर्वे व्यवस्था संलग्न रहती है ।

पवित्र और शुद्ध ज्ञान भाव जगाने के लिए यह रीत अति आवश्यक है ।

पुष्टि प्रीत सेवा की यह रीत इतनी विशुद्ध और गहरी है की जो व्यक्ति सर्वोच्च और विशुद्ध ज्ञान भाव से सेवा करना या जताना या जगाना या

स्पर्श पाना चाहता है तो यह रीत अतूट और अलौकिक है ।

श्री वल्लभाचार्यजी की सेवा प्रीत रीत निराली, अनोखी, सर्व शरणागत और आत्म पुंज सर्जक और पुष्टि पथ दर्शक है ।

''सेवा'' आज सेवा और गृह सेवा हो रही है,

वह सेवा के लिए क्या कहें ?

हम कितने प्रकार की सेवा करते है, कितने ही ज्ञान से करते है, कितने ही भाव से करते है, कितने ही विचार से करते है, कितने ही रीत से करते है, कितने ही तरंग से करते है, कितने ही रंग से करते है, कितने ही ढंग से करते है, कितने ही सलाह सूचन से करते है, कितने ही अनुकरण से करते है, कितने ही अनुसंधान से करते है, कितने ही मान्यता से करते है ।

मेरी समझ है तो ''श्री वल्लभ सिद्धांत सेवा'' - ''श्री विठ्ठल पुष्टि प्रीत सेवा'' में ज्ञान, भाव और न्योछावर होना अति आवश्यक है । न करणी का ज्ञान हो, न भाव के उत्कर्ष का सभान हो, न न्योछावर की रीत का संधान हो तो यह क्रिया केवल आडंबर जताती है, केवल मूढता जताती है, केवल निम्नता जताती है, केवल अयोग्यता जताती है, केवल मुर्खता जताती है ।

पुष्टि मार्ग प्रीत सेवा रीत तो आंतरिक और आत्मीय स्पर्श से कहे तो यह जगत की सर्वोच्च और सर्वोत्तम श्री प्रभु प्रीत और जीवन परम आनंद उत्कर्ष रीत है । श्री वल्लभ ने यह सेवा रीत जागृत करके यह जगत को अति ति दुर्लभ साधन प्रदान किया है । '' श्री वल्लभ'' को कोटी-कोटी नमन, वंदन, प्रणाम और दंडवत ।

''गृह सेवा'' ओहहह ! समझ जाओ, पहचान जाओ, और अपनाते जाओ । आनंद ही प्रकट होगा और आनंद ही कर पाओगे ।

''गृह सेवा'' कोई मर्यादा सेवा नहीं है, कोई कढंगी रीत नहीं है, कोइ तरछोडनी रीत नहीं है, कोइ बैवकूफी रीत नहीं है, कोई बंधन रीत नहीं है,

न कोई ना समझ रीत है, न कोई तकलीफ होती है और न किसीको तकलीफ करती है । पुष्टि सेवा प्रीत रीत तो अनोखी और निराली है जो केवल हृदय का भाव, तन मन शुद्ध ज्ञान और आत्मा, परम आत्मीय ज्ञान और सिद्धांत से ही प्रकट होती है । यह सेवा बाह्य की योग्यता, शुद्धता और आंतरिक पवित्रता से ही प्रकट होती है ।

यह तो अति सरल, आंतरिक और बाह्य आनंद उत्तेजित रीत है, जिसमें जीवन के सर्व पहलूओं का सर्वोच्च और सर्वोत्तम समन्वय है। ''गृह सेवा'' इतनी निराली रीत है जिसमें आंतर और बाह्य खिलती हर उर्मिओं का अद्‌भूत संयोजन है । ''श्री वल्लभ'' की जागृतता अतुल्य है । जिन्होंने मनुष्य जीवन का उत्थान अनेक प्रकार से जताया है । ज्ञान को कैसे पाना, भाव को कैसे उत्कृष्ट करना, क्रिया को कैसी कैसी योग्यता से आचरना, विचार को कैसे जगाना और मोडना, यह जगत, प्रकृति और खुद को कैसे एक दूसरे से जोडना । यह सेवा में जागृत किया है ।

वाह ! मेरे वल्लभ ! वाह !

आज तो सबकुछ बिकता है ।

आज तो सबकुछ खरीदाता है ।

सब अपनी आँखें बंध करके जीते है, खोले तो जीवन डूबता नजर आता है ।

कैसे है यह लोग जो इतनी झरझर में डूबे है फिरभी खुद को तैराकी समझ कर हर एक को डूबोते जाते है ।

खुद को धर्म का प्रणेता कहते है, खुद को तारणहार कहते है,

खुद ही दल दल में ऐसे फंसे है कि न खुद निकल सकते है न किसीको निकाल सकते है ।

हम भी ऐसे है कि ऐसे डूबे हुए को तारणहार मानते है और खुद की आँख बंध कर देते है कोई ना समझ वृत्ति से, कोई ना समझ डर से, कोई ना समझ खिंचाव से, कोई ना समझ रुढिचुस्तता से ।

पढे है तो भी एसे

देखते है तो भी एसे

समझते है तो भी एसे

सच ! कैसे हे हम ?

बाजारों में बिकते प्रभु को खरीदते है

बाजारों में बिकते पहनावा प्रभुका आँचल समझते है

बाजारों में बिकता नकली धरेणां प्रभुका आभूषण समझते है

बाजारों में बिकती सामग्री प्रभुका प्रसाद समझते है

हर खरीदने वाले को प्रभुके निकट का समझते है

हर लूटने वाले को प्रभु के सामीप्य के समझते है

ऐसा है यह हाल आज के मंदिर और यात्रा धामों में

तो क्या हाल होगा हमारे बचपन का, हमारे जीवन का ?

सोचो ! हम कभी नकली शृंगार से सजते है, हम नकली कपडे पहेनते है, हम कभी अयोग्य सामग्री खाते है, तो हमें चिकत्सालय में जाना होता हैं, क्या हम हमारे श्री प्रभुको कभी चिकित्सालय ले गये हैं ? नहीं !

हम कितनी गंदगी में जीते है, हम कितनी अस्वच्छता करते है, तो हम कैसे पायेंगे शुद्धता, पवित्रता !

''गृह सेवा'' में खुद को जगावो,

खुद से सब कुछ करो,

खुद सजावो चित्रजी को,

खुद सिलाई करो प्रभु आँचल को,

खुद भरदो फूल माला को,

खुद बनादो मयूर मुकुट को,

खुद पकादो भोग भोजन को,

खुद सजादो बैठक – शैयाजी को,

खुद उगादो धान्य फल कर्मो से,

रचदो सेवा शांत सरल से,

जागेगी उर्मि, जागेगा ज्ञान, जागेगा उत्सव, जागेगा भाव, जागेगा बचपन, जागेगा जीवन, मधुर हो जायेगी हर एक पल ।

ओहहह ! वल्लभ ! जगा दिया मेरे जीवनको

वाह ! क्या है यह नाथद्वारा !

जिसने समझाया पुष्टि जीवन

वाह ! क्या है यह नाथद्वारा !

जिसने समझाया पुष्टि दर्शन

वाह ! क्या है यह नाथद्वारा !

जिसने जताया पुष्टि अर्चन

वाह ! क्या है यह नाथद्वारा !

जिसने खिलाया पुष्टि फोरम

वाह ! क्या है यह नाथद्वारा !

जिसने मिलाया पुष्टि परब्रह्म

वाह ! क्या है यह नाथद्वारा !

जिसने जुडाया पुष्टि वैष्णव जन

डग भरते डग भरते चल रहे थे घूघरे वाली के साथ, चलते चलते पहूँच गये श्री नाथ गौशाला के पास । ओहहह ! कितनी घुमर घुमर गाय, धोली–लाल, काली –घऊ वर्णी घुघर जोर से बजाय । कितनी तंदुरस्त, कितनी सुंदर, कितनी भरावदार, बडे बडे कान, ऊंचे ऊंचे सिंग, अलमस्त और कदावर शरीर, दौडे तो रुण झुण रुण झुण, भांभरे तो ममता ही ममता, डोले तो मद मस्त हाथी, हास्य भरा चेहरा वाह !

कितनी अनगिनत गौवें !

अभी अभी की बात है ।

एक दिन यह सभी गौवें को गौचारण के लिए चार पाँच गौबालक ले जा रहे थे । दूर दूर जा रहे थे, सब अपनी मस्ती में थे, हर गाय अच्छा और योग्य वनस्पति, घास आरोगती थी और झुमती मचलती सबके साथ खेलती खेलती चल रही थी । काफी समय के बाद एक खुल्ले मैदान में सब विश्राम करने लगे । जो भी आरोगा था वह वागोलते वागोलते आनंद ले रहे थे, यहां गौबालक भी अपनी मस्ती में खेल रहे थे, आराम कर रहे थे । दूपेर का विश्राम की निरव शांति में सब डूबे थे ।

समय अपनी गति से बह रहा था और सूरज अब शाम का संकेत दे रहा

श्रीनाथजीनी गाय

मंगला दर्शन

था ! इतने में एक गौबालक की मधुरता पुचकारी और सब गौवें खडी हो कर अपने गौशाला की ओर चलने लगी, गौबालक भी डचकारा भरते भरते गौवें को प्यार से पुचकारते पुचकारते पीछे पीछे चल रहे थे। गौशाला के नजदीक आते ही अपने बछैडो को मिलने सब गौवें दोडने लगी और रंभा रंभा पुकारने लगी ।

ओहहह ! कितना आहलादायक !

मातृप्रेम की उत्कृष्टता !

सर्वे गौवें उनके स्थान और उनके बछैडो से वात्सल्य में खो गये और गौबालक सर्वे गौवें को योग्य जगह पर बांधने लगे । धीरे धीरे शाम ढल कर रात का आगमन होने लगा । गौबालक गौवें को दाना पानी चारा डालने लगे, डालते डालते एक गौबालक को लगा दो गौवें नजर नही आ रही है एक धोली और एक चबूतरी । वह अपनी नजर दूर दूर तक दौडाने लगा तो कहीं नजर न आयी, अपने साथी गौबालक को कहा, उन्होंने तीसरे गौबालक को कहा ऐसे सब गौबालक वह दोनों गौवें को ढूँढने लगे पर कहीं नजर न आयी । ओहहह ! सब विस्मय हो गये और सोचने लगे, कहा है वह दोनों गौवें और हमसे कैसे बिछड गई ? सब इकठ्ठा होके ढूँढने और सोचने लगे अब क्या करें ? कहाँ ढूँढे ?

यहाँ रात गहरी होती जा रही थी, सबने निश्चय किया चलो गौचारण की हर स्थली को ढूँढे, सब दौडे, इधर उधर, यहां वहां, पूरब पश्चिम, उत्तर दक्षिण, उपर नीचे, खेत खलयान, नदी नाला, ओहहह ! कहाँ कहाँ ढूँढा पर न मिली तो नहीं मिली । सब उदास हो गये । ऐसा तो कभी हुआ नहीं है कि हमसे गौवें बिछडे या गौवें हमसे बिछडे । हमारा प्यार, हमारा नाता ही ऐसा है कि न हम एक दूजे से बिछडे ।

थक कर चूर हो गये पर नहीं नजर आई – नहीं कोई भाल मिली, धीरे धीरे सब चेतन हीन हो गये और अपना होंश खोने लगे, और वही ही लूटक गये याने गीर गये ।

यहाँ सारे गाँव को इतल्ला हो गई कि कुछ हुआ है और धीरे धीरे सब जान गये । सारा गाँव उनके पीछे लग गये, न कोई संकेत या न कोई खबर । रात गहरी होती जा रही थी इतनी गहराई से सब चप्पा चप्पा छान रहे थे । न गौवें मिली और न गौवें का निशान ।

सब गाँव वाले में से एक गाँव वाले ने कहा चलो श्री नाथजी हवेली, प्रभुको प्रार्थना करते है, वह चोक्कस गौवें को हमसे मिलवायेंगे ।

सबने यह बात मान कर सब हवेली द्वार पहुँचने लगे । इकट्ठे हो कर प्रार्थना पुकारी । सब अब इंतजार करने लगे कोई संकेत का । यहां रात धीरे धीरे सुबह की मंद मंद उजाले का आहवान कर रही थी इतने में दूर से गौवें की घुंघरु के रुणझुण सुनाई दिया । ओहहह ! सब खडे हो गये और आवाज की दिशा की ओर तकने लगे । धीरे धीरे वह आवाज अपनी नजदीक आ रही थी, सब व्याकुल हो उठे और वह आवाज की दिशा की ओर दौडने लगे ।

ओहहह ! दूर से धोली गौवें नजर आने लगी और साथ में चबूतरी भी दिखाई दे ने लगी पर साथ में कोई हांकता हुआ भी कोई है, सब अपलक निहालने लगे । जैसे जैसे दोनों गौवें पास आने लगे तो वह हांकता हुआ कोई व्यक्ति जिसके शिर पर मयूर पंखका मुकुट पहना था और घुंघराले जुल्फें उड रहे थे, पीला पीतांबर पहना था, हाथ में लकुटी थी और नटखट चाल से आ रहा था । जैसे नजर समक्ष आये तो ओहहह ! श्री नाथजी !

सब दौडे और साष्टांग दंडवत करने लगे । श्री श्री नाथजी ने सर्वे को अपने हस्त से उठाया और मुस्कुराते कहा – यह दोनों गोवर्धन पर चर रही थी, जब में यहाँ आ रहा था तब मेरी नजर समक्ष यह दोनो पर आई और में ले आया ।

सब सोचने लगे – नाथद्वारा से गोवर्धन कैसे पहूँच गई ?

''श्री नाथजी'' मुस्कुराते दौडते दौडते अपने निज हवेली शैया भवन में पहूँच गये ।

सब सोचते सोचते मंगला दर्शन के लिए स्नान क्रिया करने पहूँचे । मुख्याजी और सेवक गण अपनी सेवा में लग गये ।

जैसे मंगल भोग की टहल उठी सब अपने घर से दर्शन आरती स्पर्श के लिए दौडे । आज सबमें अनोखा आनंद था, कहीं उत्तेजना थी, कहीं जिज्ञासा थी, कहीं आश्चर्य था, कहीं उमंग थी । जैसे दर्शन खुले – ओहहह ! बोल

''श्री वल्लभाधिश की जय'' !

''श्री नाथजी बावा की जय''

''श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय''

''गिरिराज धरण की जय''

''अष्टसखा की जय''

का जय घोष किया ।

जैसे दृष्टि श्री प्रभु पर पहूँची

ओहहह ! अति दिव्य !

प्रभु अपनी दृष्टि से सब पर प्रीत लूटा रहे थे, सब प्रभु प्रीत में प्रभु से एकात्मता जोड रहे थे ।

आज सबमें अनेरो आनंद उभर रहा था और सब उमंग उत्साह से रोमांचित थे, सब नाचने लगे, गाने लगे, और जीवन कृत कृतार्थ करने लगे । आज सर्वे ने अपने नाथद्वारा में बिराजे हर निधि स्वरुप को साथ साथ बिराज कर आनंद उर्मि उत्सव मनाया । निकट बिराजे विठ्ठल युगल स्वरुप, वनमाली स्वरुप, मदन मोहन स्वरुप, कांकरोली से द्वारकाधीश स्वरुप ने साथ बिराजके श्री प्रभु भक्त मिलन उत्सव मनाया ।

नाथद्वारा में गोलोक धाम रच दिया । आसपास के सब जाती अपनी अपनी रीत, गीत, संगीत वेशभूषा धारण करके ''श्री श्रीनाथजी'' के चरण स्पर्श पाने लगे । आज जो भी व्यक्ति दर्शन स्पर्श पाता था उन्हें संकल्प जागता था, मैं यहाँ सर्वोत्तम पुरुषार्थ करने आया हूँ इसलिए मेरे विचार, मेरी क्रिया, मेरी जीवनशैली, मेरा धर्म, मेरी शिक्षा, मेरी संस्कृति, मेरी अर्थोपार्जन वृत्ति केवल विशुद्ध, पवित्र और सत्य आचरण निर्धारित हो । आज से मैं अनीति, अवैद्य, असमंजस और अनाधिकृत व्यवहार मुक्त जीवन जी कर मेरा जन्म ''श्री श्रीनाथजी'' को शरणागत करके खुद सृष्टि, प्रकृति को विविध सौंदर्य विशुध्ध रंगो से भर दुंगा । मेरे जीवन बाग में सदा पुष्टि हरियाली सिंचित कर ''श्री प्रभु'' को प्रस्थापित कर धन्य हो जाऊंगा ।

मेरे नयन के द्वार पर बिराजे श्री नाथजी
मेरे मन को पुष्टि रीत शिखाये श्री नाथजी
मेरे तन में प्रीत सेवा उमंग जगाये श्री नाथजी
मेरे आत्म में सुबोधिनी तेज प्रकटाये श्री नाथजी

श्रीनाथ रथ

विठ्ठलनाथ द्वार

मन्दिर श्रीवनमालीजी
नाथद्वारा
मालिक : गोस्वामी श्री गोवर्द्धनेशजी, श्री गिरधारी लालजी महाराज
श्री वनमालीजी का मन्दिर
लीजी मंदिर नाथद्वारा
यहाँ भेंट लिखवाकर प्रसाद प्राप्त करें।

श्री वनमाली हवेली
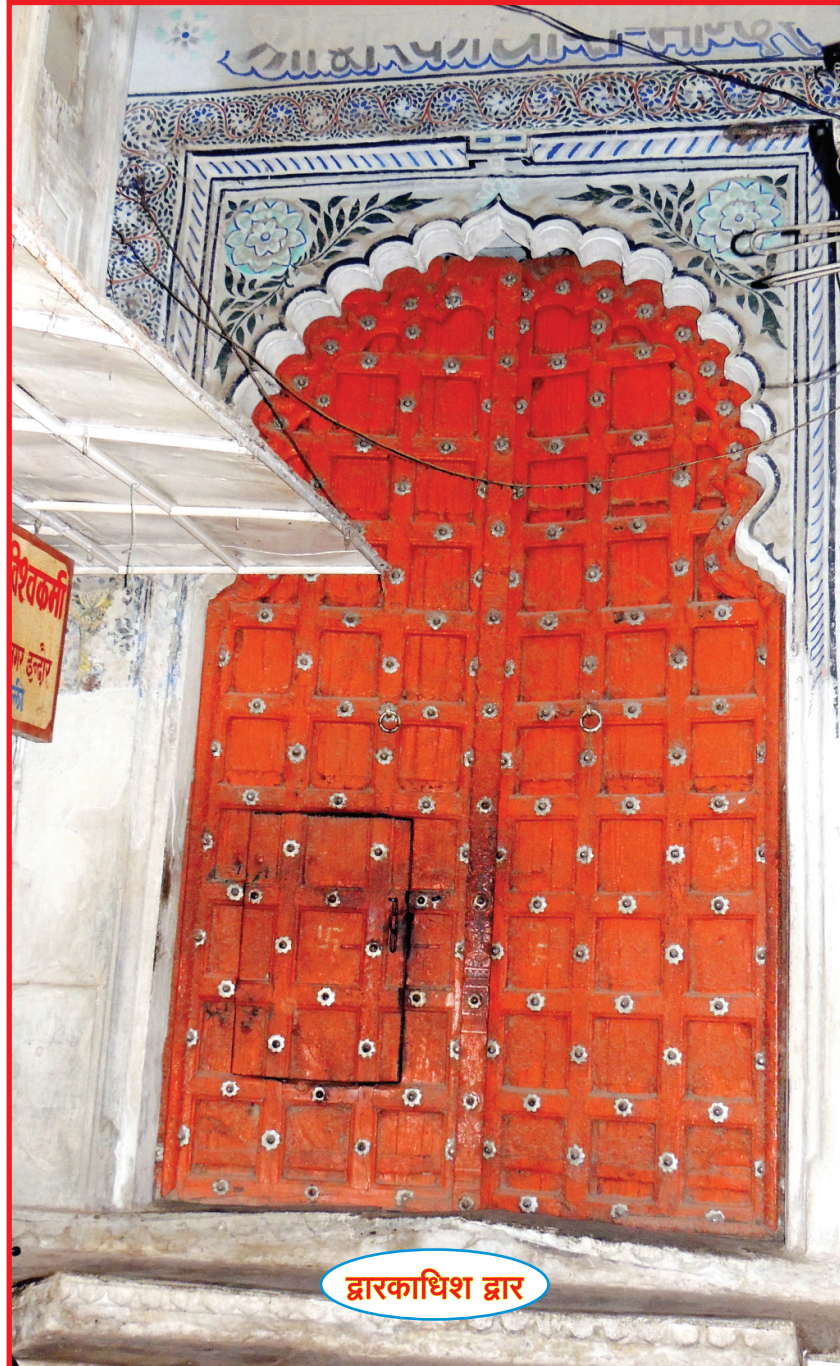
द्वारकाधिश द्वार

श्री मदनमोहनजी द्वार

मेरे आँचल में षोड्‌श संस्कार रंग भरदे श्री नाथजी
मेरे आंगन में अष्टसखा सत्संग बहाये श्री नाथजी
मेरे रज रज में गिरिराज रचाये श्री नाथजी
मेरे साँस साँस में यमुना पान कराये श्री नाथजी
कैसे निकल पडे ''श्री गोवर्धननाथजी'' !

अपनी प्राकट्‌य धरा से और जा पहूँचे एसे बिहड वन में

न तो कोई जीवन था,
न कोई बसेरा था,
न कोई किनारा था,
न कोई तरसता था

खुद खुद की सलामती खातिर तो वह बहुत कुछ कर सकते थे पर केवल प्राकट्‌य सिद्धांत के लिए वह निकल पडे, भक्त के आंतर दृढ विश्वास के आधार को सार्थक करने निकल पडे ।

जैसे वह प्रकट हुए
जैसे उन्होंने लीला करी थी
जैसे उन्होंने भक्त की रक्षा करी है

सृष्टि का सिद्धांत है की सलामत कोई नहीं है अगर सूक्ष्म से सूक्ष्म अशुद्ध वृत्ति से स्पर्श किया हो ! चाहे कोई भी परमोत्तम तत्व हो – सलामती तुटेगी ही तुटेगी ।

हाँ ! यह भी सत्य है अगर कोई भी तत्व सूक्ष्म से सूक्ष्म केवल शुद्ध वृत्ति ही हो तो सलामत रहेगा ही रहेगा – होगा ही होगा ।

चाहे कैसी भी अशुद्धता आये, वह अडग ही रहेगा और यही परम विशुद्ध तत्व है ।

जगत में पधारे तो दोष तो लगेगा ही ।

जगत में पधारे तो पुरुषार्थ से ही दोष निवारण होगा ।

• यह सिद्धांत प्रमाणित करने ''श्री प्रभु'' सदा तत्पर रहते है सदा योग्यता प्रस्थापित करने को, आत्म तत्व को शुद्ध और योग्य करने को कहीं पद्धति रच कर योग्य आत्म तत्व को धीरे धीरे सुयोग्य करके सही मार्ग पर चलने की कक्षा रचकर उन्हें सलामत करने और रखने की लीला करते रहते है ।

• जीव तत्व को जागृत करने कहीं कहीं तरह की दिशा दर्शाना !

• कभी कभी ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना जिससे जीव तत्व की कसौटी हो जाये और वह जीव तत्व खुद अपने आप को योग्य दिशा ढूँढने की कोशिश करे !

• कभी कभी छोटी सी चिनगारी जैसे अक्षर, शब्द, बनाव, संयोग, योग, काल घडते है जिससे जीव तत्व योग्य दिशा पहचान कर वह अपने आप मार्ग रच देता है, ऐसे जीव तत्व की जिज्ञासा उत्तेजित कर उन्हें सलामत करना और रखना पुष्टि तत्व का सिद्धांत है ।

• कहीं बार कहीं माध्यमों के आधारित जीव तत्व को शुद्ध करना, योग्य करना, संकेत करना, जागृत करना आदि कहीं योग, वियोग और संयोग रचने का पुरुषार्थ करते है ।

जिससे खुद के दोष का निवारण हो और सत्यता का सिद्धांत प्रज्वलित रहें । इसके लिए परम आत्म तत्व निकल पडे खुद की प्राकट्य धरा से और जा पहूँचे बिहड वन में ।

वाह ! मेरे प्रभु ! वाह !

आपको शत् शत् नमन !

कैसी विकट परिस्थिति जो सामान्य जन, सामान्य लोकपाल, अबूध, नासमझ अयोग्य शिक्षा और ज्ञान, तीव्र और दृढ अकर्म निष्ठा जो बुद्धि को कुंठित करके अराजकता ही फैलाना, यह भी एक एसी काल कसौटी है जो जाग गया वह पार हो गया जो सोवत रहा वह डूब गया या तुट गया या खो गया ।

पर

ऐसे काल में जो जाग गये उन्हें सलामत हो कर योग्य दिशा तक पहुँचना अति आवश्यक है, अति योग्य है, ऐसे क्रिया को डरपोक या असार्थक या असमर्थ नहीं समझना ही हमें योग्यता की ओर इशारा करता है, मार्गदर्शक करता है ।

गोवर्धन से नाथद्वारा पहुँचना यह ऐसा असाधारण योगदान है ''श्री श्रीनाथजी'' ने और पुष्टि संस्थापक आत्म तत्वों ने और अति तीव्र भक्ति सभर वैष्णव जनों ने पुष्टि मार्गर्दक सिद्धांत और वैष्णव कर्तव्य निष्ठा प्रमाणीत क्रिया है ।

जो जो घटना घटती थी वह हर घटना का तात्पर्य जीव तत्वों को जागृत करना ही था और सदा रहेगा ।

जो जो भी आक्रमण, धर्म परिवर्तन, लूटना, रंजाडना, कत्लेआम करना, ध्रुष्टता और नापाक कार्य करना,सब निर्लज्ज और निष्ठुर थे, जब जब भी ऐसा काल आता है तब तब हर तत्वों की कठिन परीक्षा होती है, जो निश्चयी रहा वह सत्य पाता है, और यही श्री प्रभु भी सदा करते ही है । ज्ञानी भक्त भी निःसंकोच करता ही है, और यही रीत ही हमें योगक्षेम करती है और सामान्य जनकों भी जागृत करती है, यही सत्य है ।

गोवर्धन पर ''श्री नाथजी'' श्री वल्लभाचार्यजी के अनुग्रह से बिराजे, जो

उनके पुत्र श्री गोपीनाथजी की पुष्टि सेवा प्रीत में संवत 1517 से लेकर 1534 तक भगवंत रहे, जिन्होंने कही पुष्टि ज्ञान भाव की रीत जगायी । इतनी सरलता से, इतनी दृढता से और संस्कृति और भक्ति सभर से जीवन कृत कृत हो जाय और जीवन के साथ साथ जगत और संसार का हर पहलू समझ योग्यता से शिक्षित हो जाय।

कहीं सूक्ष्म रीति रिवाजे जो सृष्टि के हर तत्व की पहचान के साथ खुद की भी पहचान हो । उसके प्रश्चायात श्री विठ्ठलनाथजी अर्थात श्री गुंसाईजी 1516 से 1586 तक जिन्होंने पुष्टि सेवा प्रीत में आमूल परिवर्तन किया। उस समय मुगल शासक के साथ साथ हिन्दु मुस्लिम कला और संस्कृति की एसी जन जन पर असर थी जिससे सब एकता से रहते थे और मुगल शासन की असर से जन जीवन और जीव सलामत रहे ऐसे जीवन धोरण से किसीको कष्ट न हो, इसलिए मुगल संस्कृति की कहीं रुचिता अपनायी । पहनावा, शृंगार, गायन, संगीत, नृत्य, कला, सजावट , शास्त्र रचनाएँ जिससे जन जन आत्म विश्वास और निर्भयता से जीये और खुद के अंदर और बाह्य कृति, वृत्ति और ज्ञान भक्त भाव से समाज को योग्य बनाये ।

पर सच कहूँ तो (सिर्फ मेरे ख्याल और समझ से) पुष्टि सिद्धांत को मरोड दिया, जो ''श्री वल्लभाचार्यजी''ने प्रकट किया था वह हर सिद्धांत को परिवर्तन कर दिया, कहीं योग्यता नष्ट कर दी ।

पुष्टि प्रीत सेवा में औपचारिकता बढ गई ।

जो ज्ञान भाव की प्रमाणितता, प्रमुखता देते है वह साधारणता और सामान्यता में फस गया ।

गिरीराज मुखारविंद

नाथद्वारा प्रयाण

प्रथम चरण स्पर्श नाथद्वारा

मोती महल द्वार

आज हम यही ही अनुभूति करते ही है । यह नकली ज्ञान, नकली भाव, नकली शृंगार, नकली सामग्री, नकली व्यवहार, नकली यात्रा, नकली आनंद, नकली भेंट सोगात, नकली मनोरथ, नकली व्यवस्था, नकली सृष्टि और नकली वृत्ति, यही बार बार पुकारती रहती है ।

अन्याश्रय की हर रीत यहां इतनी हद तक उजागर हुई थी की उस समय के आचार्य और भक्त जीव तत्वों कहीं तरह से संसार और जगत की अविधा में डूब रहे थे । उनके प्रश्चायात

श्री पुरुषोत्तम जी 1532 से 1550

श्री गिरिधरजी 1541 से 1621

श्री दामोदरजी 1576 से 1638

श्री विठ्ठलेश्वरजी 1601 से 1656

श्री लाल गिरधरजी 1633 से 1667

श्री दामोदरजी (बडे दाऊजी) 1655 से 1704 जिन्होंने अति त्रास और कष्ट भुक्ते, अति दुःखी और वेदना से भरे वह त्राहिमाम हो गये । उस समय के मुगल शासन ने उन्हें इतना मजबूर और इतना क्षुब्ध कर दिया की वह अपने आप को आत्महत्या करने के लिए इच्छुक हो गये, पर

उस समय के कहीं दृढ वैष्णव गंगाबाई और गौस्वामी के चाचा श्री गोविंदजी और श्री बालकृष्णजी ''श्री श्रीनाथजी'' को गोवर्धन से 10 ऑक्टोबर 1669 लेकर ऐसे ऐसे बिहड स्थली को लेकर छूपने लगे की कोई मुगल सुबेदार या शासनाधिकारी की नजर में न आये ।

गोस्वामीजी उस समय के कहीं राजा रजवाडा और राजस्थान के प्रमुख राजाओं से बात की पर मुगल शासन से कौन लडे या भींडे । सब ने मना किया तो गौस्वामीजी और ताद्सी पुष्टि वैष्णव भक्त जन ''श्री श्रीनाथजी'' को लपाते छूपाते भटक रहे । ऐसे तीन साल गुजर गए, आखिर राजस्थान मेवाड के राजा राना राजसिंहने

10 फेब्रुवारी 1672 को सिंहड नामक बिहड वन में बसाने की अनुमति दी, जो आज नाथद्वारा के नाम से प्रसिद्ध हे ।

उसके बाद

श्री गोवर्धनेशजी 1707 से 1763

श्री गोविंदजी 1713 से 1776

श्री बडे गिरिधरजी 1779 से 1807

श्री दामोदरजी 1797 से 1826

श्री गोविंदलालजी 1821 से 1846

श्री गिरिधरजी 1843 से 1900

श्री गोवर्धनलालजी 1863 से 1934

श्री दामोदरलालजी 1897 से 1936

श्री गोविंदलालजी 1928 से 1995

श्री राजीवजी 1949 से 2000

श्री राकेशजी 1950 से

यही प्रधान पुष्टि प्रीत सेवा जो आज अविरत बहती है ।

यही समय में नाथद्वारा में बिराजमान गौस्वामीजी के अथाक प्रयत्न से राजस्थान के राजा रजवाडा को आकर्षित करके, राजस्थान शैली की कला और संस्कृति से धीरे धीरे नाथद्वारा की वृद्धि करके एक सिमाचिन्ह रचा जिसका आज पुष्टि संप्रदाय गर्व अनुभव करती है ।

सर्वे गौस्वामीजी और दृढ पुष्टि जीवों को शत् शत् नमन और दंडवत !

आज जो कला अपनी अंदर बसते बसते आनंद लहरा रही है वह पिछवाई, रंग सभर सांझी, मिट्टी के खिलौने, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी के चित्र, पत्थर के रंग, वनस्पति के रंग, राजस्तानी मर्यादा सभर पहरवेश, लोकगीत, नृत्य संगीत, उत्सव, मेले यह सब समय समय पर हर गौस्वामीजी ने कडी मेहनत की है । आज जो आनंद नाथद्वारा में पाते है वह इन्हीं के आशीर्वाद से ही है ।

करीब 347 वर्षो से ''श्री श्रीनाथजी'' नाथद्वारा में बिराजते है । क्या कहें यह स्थली को, क्या समझे यह धरती को, क्या माने यहां उगते वनस्पति, वन, जंगल और फूल पौधे को ? यहाँ बहती बनास नदी और चारों ओर की पर्वत माला को ?

क्यूँ यह स्थली और धरती, गगन और हवा, राजा और प्रजा ''श्री श्रीनाथजी'' को भा गये ?

क्या वास्तविकता है यह स्थली की ?

पहले तो कहें जो बिहड वन और जंगल था न किसीका आना और जाना था, केवल खेत खलयान, वन वनस्पति, जंगल नदी और जो छोटे छोटे कसबे और एकल दूकल रहते वनवासी ।

गोस्वामी और उनके बालकों ने यह धरती को अपने संस्कार से पुष्ट किया

और आसपास की प्रजातियों को पुष्टि मार्ग सिद्धांत से सिंचित करके कहीं कलायें, कहीं प्रकार के उत्सव के माध्यम से बहुत कुछ शिखा कर पुष्टि दर्शन भक्ति भाव जगाया, तब यह कसबा बना, कसबा से गाँव और गाँव से नगर बना । आज नाथद्वारा में रहते सर्वे प्रकार की प्रजातियों आत्म निर्भर है ।

आज प्रजातियों का अटल विश्वास ''श्री श्रीनाथजी'' को सर्वोत्तम भाव और सुरक्षित रखने पर हर पल निष्ठा वान है । जो व्यापार, रोजगार सब अपनी अपनी आवडत से रहते है ।

सर्वे ने एक जुट होकर नाथद्वारा को योग्य स्थान हासिल करवाया है। हर पल, हर दिन, हर अठवाडिक, हर पख़वाडिक, हर मासिक और हर साल सदा ''श्री श्रीनाथजी'' के सानिध्य में रहते है और जीते है ।

आज जितनी भौतिकता बढि है पर वह अपने ''श्री श्रीनाथजी'' के साथ ही जीते है और खुद को न्योछावर करते रहते है ।

जगत की हर रज, संसार की हर बूँद और प्रकृति की हर साँस यहा अपने श्रद्धा, निष्ठा और विश्वास से पधारती है, यह रज, बूँद और साँस नाथद्वारा को भक्तिमय, उत्सवमय, संस्कृतिमय और आध्यात्मिक करता रहता है, जिससे नाथद्वारा सदा पंकज की भांति खिलता रहता है ।

वाह ! श्रीनाथजी ! वाह !

वाह ! श्रीगोवर्धननाथजी ! वाह !

पर वह दोनों गौंवे नाथद्वारा से गोवर्धन पहुँची कैसे ?

श्यामा
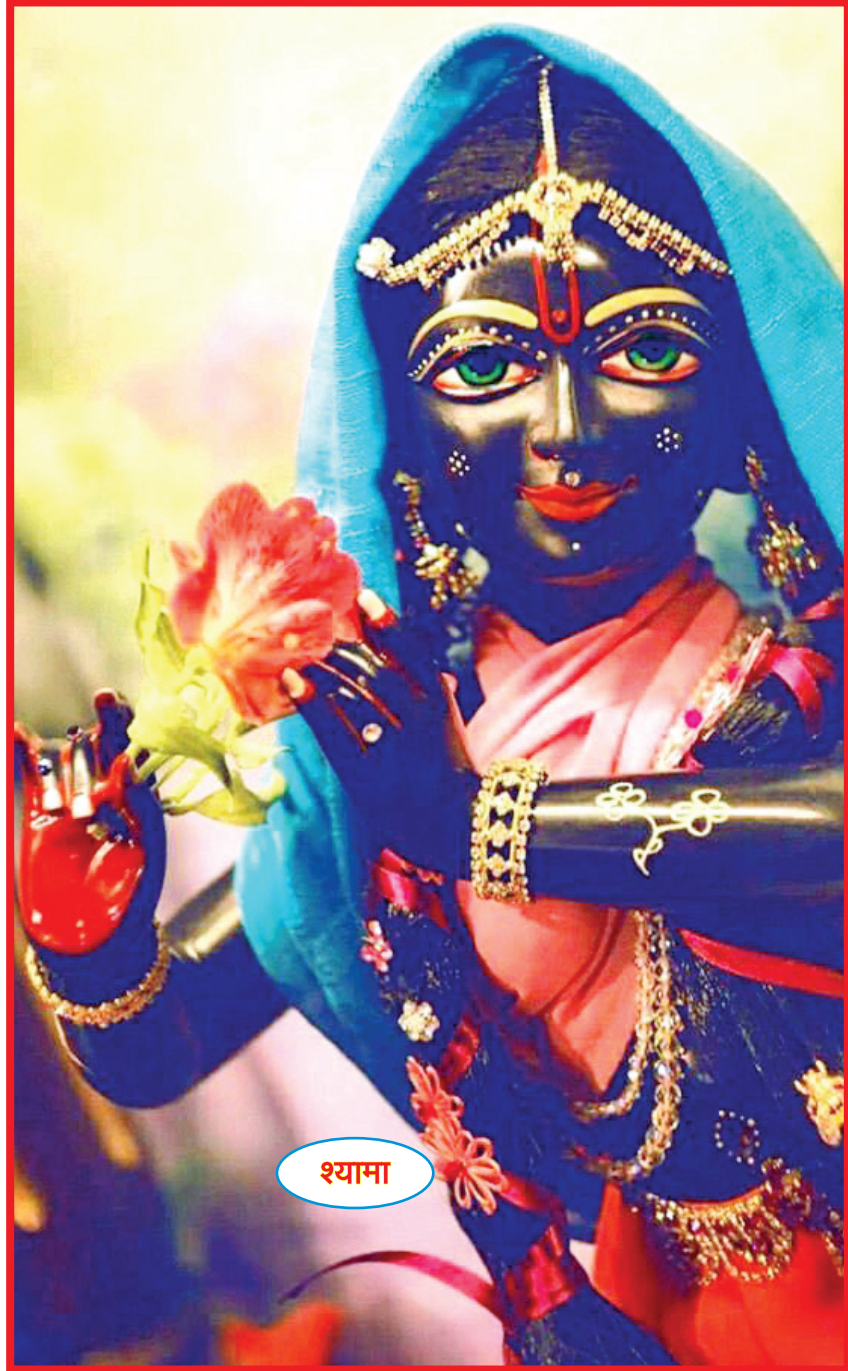
जब गौंवे गौचारण को निकली थी तब ही श्री प्रभुने तय कर लिया था की मेरे साथ रहते गौंव की प्रजा इतनी सरल और भक्ति भाव सभर है तो मैं भी उनके साथ प्रीत लीला करके परमानंद क्यूँ न लूटाऊ और मैं भी क्यूँ न आनंद पाऊं ! मुझे अति आनंद आ रहा हैं ऐसे परम शुद्ध वैष्णवों से लीला रचने में ।

वाह ! नाथद्धारा ! वाह !

कैसा है रे नाथद्वारा के नाथ !

एक बार कहीं यात्रियों व्रज की यात्रा पर पधारे और चलते चलते गोकुल की ओर पहुँचे । श्री यमुना दर्शन और पान करके श्री यमुनाघाट बिराजे थे । सब चर्चा कर रहे थे पहले श्री वल्लभाचार्यजी की बैठकजी पर सेवा दर्शन झारीजी भोग सेवा पहुँचाये, साथ ही कहीं यात्रियों ने कहा नहीं नहीं पहले श्री गोकुलनाथजी की बैठकजी पर सेवा दर्शन झारीजी भोग सेवा पहुँचायेंगे ।

बात काफी समय हुई पर कोई निर्णय नहीं आया पर एक बहस छिड गई और कहीं जिद पर आ गये पहले श्री वल्लभाचार्यजी – पहले श्री गोकुलनाथजी !

समय बीतता जा रहा था और उग्रता तेज हो रही थी । दूर एक व्यक्ति सोच रहा था यह कैसी रीत और समझ है ? यह कैसा धर्म धारण प्रीत है ? यह कैसा प्रदर्शन है ? यह कैसी शिक्षा संस्कार है ? श्री पुष्टिमार्ग के प्राकट्य भूमि पर ऐसी चर्चा ? श्री पुष्टि मार्ग के प्रणेता श्री वल्लभाचार्यजी ने यही स्थली से सारा जगत को पुष्टि सिद्धांत से अनेक जीवो का उद्धार करने की दिक्षा और दिशा जागृत करी वही स्थली पर ऐसी जिद भरी चर्चा ।

ओहहह ! कैसी बातें करते है

हम ''जय श्री कृष्ण'' नहीं बोल सकते है

हम ''श्री श्रीनाथजी'' के दर्शन और सेवा प्रसाद नहीं ग्रहण कर सकते है, हम कभी अन्याश्रय नहीं करेंगे ।

हमारे श्रीगोकुलनाथजी ने ही पुष्टि मार्ग का रक्षण किया है इसलिए हमारे श्री वल्लाचार्यजी भी वही है और आपश्री के सेवा स्वरुप ही हमारा सर्वस्व है, हम उनकी ही सेवा करेंगे ।

हमारे श्री गोकुलनाथजी की हर रचना शिक्षा ज्ञान भक्ति की रीत से ही हम हमारा धर्म और कर्तव्य है, यही योग्य है ।

ओहहहह ! कैसी बहस छिड गई !

वह व्यक्ति ने सोचा कुछ मार्ग निकाले...यह बहस से पुष्टि मार्ग का विभाजन होता है और कहीं नासमझ ज्ञान भाव को योग्य करना चाहिए ।

वह व्यक्ति धीरे से वह चर्चित समूह को हाथ जोड कर विनंती करके कहने लगा, हे भगवदियों ! आप सर्वे को मेरा प्रणाम ! आप सब इतने ज्ञानी और पुष्टि भाव प्रणेता हो, आप सब की चर्चा सुन कर मैं प्रभावित हुआ हूँ, आपकी निष्ठा और समझ की मैं सराहना करता हूँ। पर

आप सबकी यह चर्चा की उग्रता देख कर मैं एक विनंती भरा सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हुँ ।

आप सर्वे आज्ञा करो तो मैं कुछ कहूँ ?

सर्वे शांत हो कर उन्हें सम्मति दी । वह व्यक्ति ने कहा आप सर्वे की ज्ञान भावना से मैं एक सुझाव करता हूँ की मैं एक तराजू यहाँ श्री यमुनाघाट पर

लगाता हूँ । आप सर्वे यात्रियों में से एक व्यक्ति ''जयश्री वल्लभ'' लिख कर तराजू के एक पल्ले में रखें और दूसरे पल्ले में ''जय जय श्री गोकुलेश'' लिख कर रखें, जो पलडा झुक जाये वहाँ प्रथम पहुँचना, और जो पलडा उपर जाये वहाँ बाद में पहुँचना ।

सर्वे ने स्वीकार लिया और सब तैयारी कर दी । अब प्रथम ''जय श्री वल्लभ'' यह पल्ले में विश्वास और निष्ठा से लिख कर रखा, बाद में दूसरे पल्ले में भी विश्वास और निष्ठा से '' जय जयश्री गोकुलेश'' लिख रखा ।

पल भर के समय के बाद ''जय जय श्री गोकुलेश'' का पल्ला नीचे बैठ गया, जो यात्री '' श्री गोकुलनाथजी'' की बैठक के लिए कह रहें थे वह उछल पडे, हर्षोल्लास से ''जय जय श्री गोकुलेश'' पुकारने लगे ।

ओहहह ! वह व्यक्ति जो सुझाव प्रस्तुत कियाथा वह अचंबित रह गया, सोचने लगा – ऐसा कैसे ? और जो यात्री ''जय श्री वल्लभ'' लिखा था वह सर्वे भी शोक मग्न और सोचने लगे – ऐसा कैसे हो सकता है ?

उतने में वह व्यक्ति तुरंत कह उठा – ओहहह ! यह तो होना ही था । सर्वे शांत हो जाव !

हम जान गये है यह कैसे हुआ, सर्वे इकट्ठे हो गये और वह व्यक्ति कहने लगा – ''जय जय श्री गोकुलेश'' का पलडा भारी ही है वह झुकेगा ही झुकेगा और ''जय श्री वल्लभ'' का पलडा हलका है तो वह उपर ही जायेगा ।

सर्वे कहने लगे – क्या कह रहे हो ! कैसी बातें कर रहे हो ?

''जय जय श्री गोकुलेश'' का पलडा पहले से भारी ही था ! नहीं समझ पाये ?

वह व्यक्ति ने सर्वे को बिठाया और समझाने लगा – देखों

''जय जय श्री गोकुलेश'' सही है ?

हाँ ! यह बहुत भारी है ।

''जय श्री वल्लभ'' सही है ?

हाँ ! यह भारी नहीं है ।

और वह व्यक्ति हास्य का फूंवारा उडाने लगा, नाचने लगा ।

सर्वे आश्चर्य हो कर कहने लगे – अरे भाई ! समझावों !

क्या कहें रहे हो ? वह व्यक्ति तुरंत बोला – ''जय जय श्री गोकुलेश''

जय – प्रथम जय माने ''श्री वल्लभ''

जय – दूसरा जय माने ''श्री गोकुलनाथजी''

श्री – माने ''श्री नाथजी''

गोकुलेश – माने गोकुल में बसने वाले गोकुलनाथजी का सेवा स्वरुप

ओहहहह ! थर तो कितना भारी हो गया

और यहाँ – यह पल्ले में '' जय श्री वल्लभ''

जय – प्रथम जय याने ''श्री वल्लभ''

श्री – याने ''श्रीनाथजी''

वल्लभ – याने केवल वल्लभ का आंतरिक स्वरुप अब कहो !

इतने में एक वंटोळ आया और धीरे धीरे घने बादल छाने लगे,

यह काले घने बादल धीरे धीरे नीचे की तरफ आते ही बरसात की बूंदे

'' जय श्री वल्लभ'' के पल्ले में बरसने लगी, वह पल्ला झुक गया ।

सर्वे यात्रियों आश्चर्य चकित हो गये और एक ऐसी अनुभूति पाने लगे पुष्टि स्पर्श का आनंद लूटने लगे ।

इतने में वह व्यक्ति ने कहा – सच ! आज हम सर्वे कृतार्थ हो गये ।

देखों आज यहाँ –

''श्री यमुनाजी'' पधारे – बूँद के स्वरुप से

''श्री श्रीनाथजी'' पधारे काले घने बादल याने घनश्याम स्वरुप से

''श्री वल्लभ'' पधारे जय स्वरुप से

''श्री गोकुलनाथजी'' पधारे जय स्वरुप से

बैठकजी के निधि स्वरुप से पधारे

''श्री वल्लभ'' का आंतरिक स्वरुप

और

''गोकुलेश'' से पधारे गोकुलनाथजी का सेव्य निधि स्वरुप

और यह सर्वे के साथ – ''व्रज भूमि''

ओहहहह ! सर्वोत्तम

सब एक साथ पुकारने लगे

जय घोष करने लगे

''श्री श्रीनाथजीबावा की जय''

''श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय''

''श्री वल्लभाधिश की जय''

''श्री गोकुलनाथजी की जय''

''श्री वल्लभ निधि स्वरुप की जय''

''श्रीगोकुलनाथजी निधि स्वरुप गोकुलेश की जय''

''श्री व्रजभूमि की जय''

और सर्वे यात्रियों गद गद हो कर एक दूजे को नमन करके '' जय श्री कृष्ण'' कहके दंडवत प्रणाम करके खुद को और अपनी सेवा को न्योछावर करने लगे । हर यात्रीने संकल्प किया और प्रण लिया और दृढ विश्वास से कहाँ प्रथम चरण ''श्री वल्लभाचार्यजी'' ही है तो हम सर्वे प्रथम ''श्री वल्लभाचार्यजी'' का दंडवत करे ! हर्षोउल्लासीत सर्वे वैष्णवजनने पुष्टिमार्ग की योग्यता को सन्मानीत करके और पुष्टिमार्ग प्रणेता को साष्टांग दंडवत करके पुष्टि संप्रदाय की योग्यता को सार्थक किया ! उसके पश्चात '' जय श्री कृष्ण''

''श्री गोकुलनाथजी'' के चरण स्पर्श पाये और दंडवत किया ! उसी पल सर्वे को ''श्री श्रीनाथजी'' के साक्षात्कार की अनुभूति पायी, सर्वे जन का तन, मन,धन और आत्म ''श्री श्रीनाथजी'' का तेज पूंज का स्पर्श पाने लगे ऐसे है ''श्री श्रीनाथजी !''

''ऐसा है यह नाथद्वारा का नाथ''

यहाँ कभी कभी पर्यटक भी आते है जिससे नाथद्वारा का माहौल व्यापारिकरण में तबदील हो रहा है, यहाँ की प्रजा में कहीं बदलाव आ रहा है जिससे नाथद्वारा का भक्ति भाव में काफी परिवर्तन आ रहा है, जो हमें बार बार इसकी अनुभूति होती है ।

यह सामाजिक और भौतिक बदलाव को कोई रोक नहीं सकता कयूँकि यह तो जगत परिवर्तन नियम है यह तो चलता ही रहेगा । हाँ ! इतनी दृढता कर सकते है कि हम हमारी श्रद्धा, हमारी नियति और निष्ठा, हमारा

विश्वास संयमित रखकर नाथद्वारा को शुद्ध और योग्य घड सकते है ।

हम न किसीसे प्रेरीत हो कर असैद्धांतिक व्यवहार करेंगे अर्थात न किसीको अवैद्य पैसा दे या न भेंट या न रिश्तेदारी दिखायेंगे तो शायद हवेली की मान मर्यादा, पवित्रता, संस्कृति, सभ्यता सदा जागृत रहेगी । जो सेवा दूग्ध, फूल, मेवा और शाकभाजी या तरकारी भोग के लिए पधरायेंगे वह खुद ही अपने गृह नगर से या विस्तार से ले कर आए ऐसी योग्य सामग्री सेवा कोई ओर नहीं है । क्यूँकि जो भाव जागेगा वह भाव श्री प्रभु सन्मुख तक रहेगा जिससे अपने में आनंद प्रकट होगा, जो सामग्री लायेंगे उनमें से ही भोग और प्रसाद ले सकते है, कभी एक दिन के लिए आये होते है तो ऐसा सात्विक आहार पसंद करे जिससे अपना भक्ति भाव बना रहे, हम कोई पर्यटक नहीं है जो आये और थोडी सी झलक देखली और चल पडे । नहीं नहीं यह तो हमारी श्रद्धा, निष्ठा और विश्वास की धर्म भक्ति नींव है उन्हे ऐसे सामान्यता से तोड मरोड नही सकते ।

नाथद्वारा का आकर्षण अनोखा है, जब भी संकल्प करते है, तुरंत पहूँचने के लिए मन व्याकुल रहता है । जब तक नहीं पहुँचते तब तक आंतरिक घंटडी बजती रहती है – चलो, चलो, उठो, उठो ।

जैसे निकलने की संभावना बढती जाती है तन मन में कोई एक तीव्रता जागती है और जब तक नहीं पहुँचते वह तीव्रता अति प्रबल हो जाती है । जैसे जैसे नजदीक आते जाते है साँसों में कोई अलग प्रकार की उत्कंठा उठती है, मन दौडने लगता है और तन कुछ अलग प्रकार की अनुभूति करता है । पहुँचते ही तन दौडता है, मन ढूँढता है और आत्म तडपता है ।

अरे भाई क्या है यह ?

बहनजी ! यह श्रीनाथ धाम है, यहाँ सबकूछ श्रीनाथ का ही मिलेगा ।

यह श्रीनाथ के चित्रजी है जो यहाँ यात्रा करने आते है वह खुद अपने घर के लिए साथ साथ अपने रिश्तेदार, संबंधी, मित्र, सगा स्नेही को भेंट करने के लिए ले जाते है ।

पर यहा तो ....

हाँ ! वह हर प्रकार के यहां मिलता है ।

देखो कैसी कैसी झांखी है मेरे प्रभुकी

कैसे कैसे शृंगार सजे है मेरे प्रभुने

सब एक से एक बढिया है

यह देखो हमने खुद ने अपने हाथों से बनाया है

हर रंग, शृंगार और मुखारविंद तो देखो

हाथ में पकड कर इधर उधर

कभी दिवाल की ओर

कभी अपनी दुकान की सजावट पर

कभी एक टोकरी में भरे हुए चित्रजी से हमें बार बार खरीदने के लिए कह रहा था

अरे बहनजी ! ले लीजिये

यह 5 रुपये के है

यह 30 रुपये के है

यह 100 रुपये के है

श्री वल्लभाचार्यजी

श्री यमुनाजी

श्यामसुंदर श्री यमुने महाराणी

श्री बेठकजी

प्रितम पोल द्वार

प्रितम पोल

यह 300 रुपये के है

यह 500 रुपये के है

यह 750 रुपये के है

यह 1000 रुपये के है

यह 3000 रुपये के है

यह 5000 रुपये के है

यह 10000 रुपये के है

सब एक से बढिया एक है ।

ले जावो बहनजी !

आपके घर में जचेगा ।

सोचने लगे बहनजी और एक के बाद एक को अपनी चाह, अपने विश्वास, अपने लगाव, अपने प्रेम और श्रद्धा से देखने लगे ।

हाथ में लिया

नजर चिपकाया

नयन पलक अपलक किया

कभी यह देखा तो कभी वो देखा

फिर देखते देखते मन को स्थिर करने लगे

बहुत सोचा पर कहीं पर भी स्थिर न हो पाये

वहां ही वह दुकानदार बोला

बहनजी यह ले जाव !

बहनने उनकी तरफ नजर उठाई

अपलक देखते देखते

अपने नैनों से गंगा यमुना बहने लगी

धीरे धीरे वह अपने तन मन और नयन को बिना रुके तडप तडप कर रुदन करने लगी ।

आसपास बैठे हुए और दुकानदार सहमे सहमे हो गये, तुरंत उनके पास पहुँच कर उन्हें शांत करने लगे, पर बहनजी अति व्यथा से वह आकुल व्याकुल हो गई, वह श्रीनाथजी के चित्रजी को देखकर उनके हृदय में कोई असर होती थी ।

सबने मिलकर उन्हें संभालने की शुरुआत की पर वह तीव्रता से व्याकुल हो रही थी । सब सोचने लगे यह एकाएक कैसे हो गया ? यह बहनजी इतनी व्याकुल और दुःखी क्यूँ है ? किसीने कुछ कहा या कुछ क्या याद आ गया जिससे वह व्याकुल है ?

समय की बहती गति में वह धीरे धीरे शांत होने लगी पर मुख पर उदासी के बादल बहुत गहरा छाया था, उनके दिल में गहरी चोट लगी थी । वह आंतरिक डूसका(रुदन कर) भर रही थी ।

थोडी देर के बाद उनकी सहेली ने पूछा – अब कैसा लग रहा है ?

वह फिरसे अपने आप को रोक न पायी । अब सबको लगने लगा कोई गहरी चोट उन्हें लगी है ।

थोडी देर हुई और वह अपनी जगह से उठी और चलने लगी ।

उनके मन में घमासान मच रहा है ।

यह घमासान था अपनी संस्कृति के लिए

यह घमासान था अपना विश्वास के लिए

यह घमासान था अपनी निष्ठा के लिए

यह घमासान था अपनी प्रीत के लिए

यह घमासान था अपना धर्म के लिए

यह घमासान था जगत के रीत रिवाज के लिए

यह घमासान था अपनी शिस्त के लिए

यह घमासान था अपनी गैर व्यवस्था के लिए

यह घमासान था अपनी अंधश्रद्धा के लिए

यह घमासान था आज की पुष्टि सृष्टि के लिए

यह घमासान था कितना अंधकार का व्याप हो रहा है और केवल निजी स्वार्थ के लिए क्या हो रहा है

ओहहह !

उन्हें खुद पर गिन्न आने लगी

मैं कौन हूँ ?

मैं यहाँ नाथद्वारा आके क्या कर रही हूँ ?

केवल ऐसे घुमना,

केवल यहां की चाट चपाटी खाना,

केवल यहां दूध रबडी और बस यूँ ही बैठे रहना,

केवल मंगला के दर्शन किया बादमें यह नकली आभूषण,

नकली पहनावा में खो जाना,

यात्रा करने आये है की पर्यटक होके,

नाथद्वारा की श्रेष्ठता को तोडने

कृष्ण से जुडना

हम आते है यहाँ खुद की पुष्टि दृढ करने

हम आते है यहाँ खुदको पुष्टि सिंचन करने

हम आते है यहाँ पुष्टि प्रीत संगमें रंगाने

हम आते है यहाँ पुष्टि गृहस्थ सेवा से जुडने

हम आते है यहाँ हमारी विरह प्रीत को एकात्म करने

हम यहाँ क्यूँ है ?

हम यहाँ बार बार क्या करने आते है ?

कृष्ण से जुडने

कृष्ण से कैसे जुडे जाय ?

यह शिखने, यह समझने और यह अपनाने यहाँ आते है ।

जैसे यहाँ बसते हुए रहवासी का जीवन धोरण, उनकी भावना, उनकी एकात्मता ।

उसके बदले हम उनके जीवन धोरण बदल देते है

उनमें हमारे व्यवहार और आचरण भर देते है

उनकी एकात्मता को तीतर बितर करके ऐसे बिखर देते है जैसे एक सरलता को कठिन और कठोर जीवन की ओर धकेल देते है ।

नाथद्वारा की योग्यता को साधारण कर देते है ।

आज नाथद्वारा क्या हो गया है ?

नहीं भक्ति, नहीं तृप्ति, नहीं चेतना, नहीं संवेदना
केवल और केवल व्यापार और विवशता ।
कहाँ है कृष्ण चरित्र
कहाँ है कृष्ण ज्ञान
कहाँ है कृष्ण भक्ति
कहाँ है कृष्ण रीत
कहाँ है कृष्ण प्रीत
कहाँ है कृष्ण सृष्टि
कहाँ है कृष्ण पुष्टि
कहाँ है कृष्ण लीला
कहाँ है कृष्ण कला
कहाँ है कृष्ण उमंग
कहाँ है कृष्ण सत्संग
कहाँ है कृष्ण शृंगार
कहाँ है कृष्ण निखार
कहाँ है नाथद्वारा
कहाँ है प्रभु विरह मारा
कहाँ है वल्लभ दास
कहाँ है पुष्टि प्यास
कहाँ है अष्टसखा उमंग

कहाँ है पुष्टि वैष्णव संग
कहाँ है छप्पन भोग लगन
कहाँ है माखन मिसरी सुगंध
कहाँ है गौधन की टहल
कहाँ है गोप बालक वलकल
कहाँ है आनंद उत्सव वृंद
कहाँ है तडपने का आक्रंद
कुछ तो है ....
जो नैन को अपलक करता है
जो होठों को सी देता है
जो कानों को बंध कर देता है
जो साँसों को थांब देता है
जो धडकन को मंद तेज करता है
जो मन को शांत करता है
जो तन को जलाता है
जो ख्यालों को भगाता है
जो नयनों को भटकाता है
जो स्वर को भूलाता है
जो आँचल को हवा करता है
जो डग को लडखडाता है
जो प्यास को सूखा पिलाती है

जो भूख को तलवे से बुझाती है

जो हाथों को मरोडती है

जो दिल को यादों से चुभाती है

कौन है जिससे प्यार करता हूँ

कहाँ है नहीं खबर

क्या करता है नहीं खबर

न कभी नैनों नहीं देखा

न कभी तन ने छुआ है

है कोई !

कौन है नहीं पता

है कोई जो हर पल साथ है

इतने में टहल पुकारी

''श्री वल्लभाधिश की जय''

''श्री नाथजी बावा की जय''

ओह उत्थापन दर्शन के लिए श्री प्रभु पधारे !

बहनजी ने खुद को होश और हिम्मत जुटाई और हवेली की ओर प्रयाण किया ।

अरे प्रभु ! क्यूँ आज हमसे खफा हो ! क्यूँ ऐसा मुखारविंद ?

क्या गलत हुआ है मुजसे जो आज आप इतने उदास है ?

प्रभु ने कहा – सहेली ! मेरे द्वार पर मेरे धाम में आई हो और तुम्हें ऐसा हुआ !

आज तुम्हें कुछ कहना है ।

ओहहह !

बहनजी सहसा आश्चर्य हो गई

प्रभु मुझे कुछ कह रहे है !

प्रभु मुझसे बातें कर रहे है !

ठहर गई पल,

अपलक हो गये नैन

मुख हरखने लगा

होठ स्थिर हो गये

साँस जोरसे धडकने लगी

मन शांत हो गया

सहेली ! सुन

यह जगत – यह संसार – यह सृष्टि – यह प्रकृति

यह जीवन और यह धारणा

यह सबके लिए कभी न सोचो

केवल इतना ही सोचो

मैं क्या हूँ और मैं क्या कर रहा हूँ ?

मैं सदा यही ही सोचता हूँ और यही से जो शिखता हूँ वही कर रहा हूँ ।

खुद जागा खुदा जागा

यह जगत में मेरे सिवा कोई नहीं जागता है,

શ્રીનાથજી ની હવેલી (મંદિર) માં બાહર થી કોઈ પણ પ્રકાર નો તૈયાર પ્રસાદ ભોગ નહીં ધરવાય.

અહિયાં જોવાતી દરેક સામગ્રીયોં શ્રીનાથજી ની હવેલી (મંદિર) માં ભોગ ધરાવેલુ અધિકૃત મહાપ્રસાદ છે અને 'ચોખા (શુદ્ધ) ઘી' માં નિર્મિત છે.

હવેલી (મંદિર) માં ભોગ ધરાવનાર સંપૂર્ણ મહાપ્રસાદ મંદિર ના પોતાના સેવકોં શુદ્ધ ઘી થી તૈયાર કરીને શ્રીનાથજી ની સમ્મુખ ભોગ ધરે છે.

ઠાકુરજી ની સેવા કરવા વાળા એ સમગ્ર સેવકોં ને એમની સેવા ના પ્રતિફલ રૂપે કેવળ આ (ઠાકુરજી ની સામે ભોગ ધરેલુ) મહાપ્રસાદ મળે છે.

કેવળ મહાપ્રસાદ ખાવાથી જીવનયાપન સમ્ભવ નથી અને એ પોતે એને વેચશે તો ઠાકુરજી ની સેવા ક્યારે અને કેમ કરશે?

તેથી, એ સેવકોં પોતાના કુટુંબ અને સામાજિક જવાબદારી ના સાવ માં આવશ્યક ધન ની પૂર્તિ માટે મંદિર ના અધિકૃત મહાપ્રસાદ વિક્રેતાઓ થી કરાર માં રહે છે.

મંદિર (હવેલી) ના બધા સેવકોં ને પ્રાપ્ત આ મહાપ્રસાદ અમે મંદિર ના અધિકૃત પ્રસાદિયા (પ્રસાદ વિક્રેતા) ખરીદી કરીને એમને નિયત ધનરાશી આપીએ છે.

તેથી એમને કુટુંબ અને સામાજિક જવાબદારીઓ નો સાવ સરળતા થી થાય છે અને સામાન્ય લોકોએ ઠાકુરજી નો ભોગ ધરાવેલું બધી પ્રકાર નું અધિકૃત મહાપ્રસાદ યોગ્ય (વાજબી) દરે ઉપલબ્ધ થાય છે.

શ્રીનાથજી ના સેવકોંએ મહાપ્રસાદ વિતરણ ની ઉપરોક્ત વ્યવસ્થા ઘણા વર્ષો પહેલા પરમપૂજ્ય પ્રભુચરણ શ્રીગુસાઇજી દ્વારા પ્રારંભ કરવામાં આવી હતી અને બધા અધિકૃત પ્રસાદ વિક્રેતાઓ ની દુકાનો વિગત ૧૦૦ - ૧૫૦ વર્ષો સુધી થી વૈષ્ણવોએ શ્રીનાથજી નો ભોગ ધરાવેલું અધિકૃત મહાપ્રસાદ ઉપલબ્ધ કરાવે છે.

મંદિર માં ભેંટ કરવાના અનેક સાધનો છે જેમાં તમે ધનરાશી, અનાજ, દૂધ, ફળ, ફૂલ વગૈરા પ્રભુ ની સેવા માં ભેંટ કરી શકો છો.

એની ઉપરાંત ઘર વપરાશ, સંબંધીયો, પડોશીયો, મિત્રો, કાર્યસ્થળે (ઓફીસ) વગૈરા માં વેચવા માટે બધી પ્રકાર નો ઈચ્છિત મહાપ્રસાદ મંદિર થી અધિકૃત અમારી દુકાન થી જ લેવું.

श्रीनाथजी मन्दिर में मन्दिर के बाहर से किसी भी प्रकार का तैयार प्रसाद भोग नहीं लगाया जाता.

यहाँ दिखाई देने वाली सभी सामग्रियां श्रीनाथजी मन्दिर का भोग लगा हुआ अधिकृत (Official) महाप्रसाद है और 'शुद्ध देशी घी' से निर्मित हैं.

मन्दिर में भोग लगाया जाने वाला सभी महाप्रसाद मन्दिर के अन्दर सेवा करने वाले सेवकों द्वारा ही सिद्ध (तैयार) कर श्रीनाथजी को अरोगाया (भोग लगाया) जाता है.

ठाकुरजी की सेवा करने वाले उन सभी सेवकों को उनकी सेवा के प्रतिफल (पारिश्रमिक, वेतन) के रूप में यह (ठाकुरजी को भोग लगा हुआ) महाप्रसाद ही दिया जाता है.

केवल महाप्रसाद खाने से जीवनयापन संभव नहीं और यदि वे स्वयं इसे बेचेंगे तो सेवा कब और कैसे करेंगे?

अतः अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों के निर्वहन हेतु आवश्यक धन की पूर्ति के लिए सभी सेवक मन्दिर के अधिकृत प्रसाद विक्रेताओं से अनुबंधित रहते हैं.

मन्दिर के सभी सेवकों को मिलने वाला वह महाप्रसाद हम मन्दिर के अधिकृत (Official) प्रसादिया (प्रसाद विक्रेता) क्रय करते (खरीदते) हैं और उनको नियत धनराशि प्रदान करते हैं.

इससे उनके पारिवारिक व सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी आसानी से होता है और सामान्यजन को ठाकुरजी का भोग लगा हुआ सभी प्रकार का अधिकृत (Official) महाप्रसाद उचित दरों पर उपलब्ध हो जाता है.

श्रीनाथजी के सेवकों को महाप्रसाद वितरण की उपरोक्त व्यवस्था वर्षों पूर्व परमपूज्य प्रभुचरण श्री गुसांईजी द्वारा प्रारंभ की हुई है और सभी अधिकृत (Authorised) प्रसाद विक्रेताओं की दुकानें लगभग 100 - 150 से भी अधिक वर्षों से वैष्णवों को प्रभु श्रीनाथजी का भोग लगा हुआ महाप्रसाद उपलब्ध करा रही हैं.

मन्दिर में भेंट करने के कई साधन हैं जिनके माध्यम से आप धनराशि, अनाज, दूध, फल, फूल आदि प्रभु की सेवा में भेंट कर सकते हैं.

इसके अतिरिक्त घर पर उपयोग, रिश्तेदारों, स्वजनों, पड़ौसियों, कार्यस्थल (ऑफिस), मित्रों आदि में बाँटने के लिए आप सभी तरह का मनचाहा महाप्रसाद मन्दिर की अधिकृत हमारी दुकान से ही लें.

प्रसाद विक्रेता

प्रमुख पुष्टि आलेख

यमुना जल सेवक

कमल चोक

कोई नहीं समझना चाहता है ।

इसलिए तो मैं यहाँ हूँ, अकेला, सोचता हुआ समझता हुआ ।

पहले मैं सबके घर जाता था,

अब यहाँ खडा हूँ । सब मेरी गली में आते है ।

नित्य अपनी अपनी बातें कहते रहते है

मैं सुनता हूँ, समझता हूँ और जो मेरे सिद्धांत से जीते है उनके साथ सदा रहता हूँ और सदा साथ निभाता हूँ ।

जब गीता में अर्जुन को जो कहा था वह तुम्हें भी कहता हूँ

यह सब तो पहले से मरे हुए है उन्हें क्या मारना, मुझे तो ऐसा नरवीर चाहिए जो सदा अपने भक्तों को सलामत रखें और करें ।

यहां जो विशुद्ध पुरुषार्थ से जीते है सदा उनके साथ में हूँ,

चाहे उन्हें काल मारने की कोशिश भी करे तो मैं उगार लूँगा ।

ओहहह !

मेरे जगत में !

मेरे संसार में !

तो मैं क्या ?

मैं ही सूरज हूँ ।

मैं ही चंद्र हूँ !

मैं ही आकाश हूँ ।

मैं ही सागर हूँ ।

मैं ही अग्नि हूँ ।
मैं ही धरती हूँ ।
मैं ही वायु हूँ ।
मैं ही संस्कृति हूँ ।
मैं ही प्रकृति हूँ ।
मैं ही सृष्टि हूँ ।
मैं ही पुष्टि हूँ ।
मैं ही सत्य हूँ ।
मैं ही धर्म हूँ ।
मैं ही ज्ञानी हूँ ।
मैं ही भक्ति हूँ ।
मैं ही कर्मवीर हूँ ।
मैं ही नित्य हूँ ।
मैं ही परिणाम हूँ ।
मैं ही प्रीत हूँ ।
मैं ही अभेद हूँ ।
मैं ही समांतर हूँ ।
मैं ही औषधि हूँ ।
मैं ही सेवा हूँ ।
मैं ही दया हूँ ।

मैं ही निष्ठा हूँ ।

मैं ही शिस्त हूँ ।

मैं ही शिक्षा हूँ ।

मैं ही संस्कार हूँ ।

मैं ही निर्भय हूँ ।

मैं ही निर्मल हूँ ।

मैं ही सरल हूँ ।

मैं ही नियम हूँ ।

मैं ही संयम हूँ ।

मैं ही निर्मोही हूँ ।

मैं ही सत्संग हूँ ।

मैं ही जप हूँ ।

मैं ही यज्ञ हूँ ।

मैं ही वियोग हूँ ।

मैं ही मित्र हूँ ।

मैं ही भागवत हूँ ।

बहनजी श्री प्रभु का संदेश, संकेत और आज्ञा सुन कर संकोच में आ गई । सोचने लगी यह कैसा न्याय और व्यवहार श्री प्रभु का !

इतना सारा अन्याय, इतना दुर्लभ समय के साथ मानव की जीवन पद्धति मानव को कहाँ पहूँचायेगी ?

पता नहीं श्री प्रभु क्या चाहते है ?

श्री प्रभु क्या कर रहे है और करा रहे है ?

बहनजी संकोच में पड गई । अपना तन,मन ....

''श्री प्रभु'' ने देखा, यह जीव तत्व उदास और भयभीत होने लगा है ।

साँसों की आवन वल्लभ गाये

साँसों की जावन वल्लभ गाये

मन की उदभवता वल्लभ गुन गुनाये

मन की चंचलता वल्लभ बहाये

नैन की पलक वल्लभ बुलाये

नैन की अपलक वल्लभ निहाले

होठ के सूर वल्लभ सुनाये

होठ की गूँज वल्लभ खिलाये

अधर के बंध वल्लभ पुकारे

अधर के खुलन वल्लभ सोहाये

तन की शुद्ध वल्लभ महकाये

तन के स्पंदन वल्लभ जगाये

आत्म की प्यास वल्लभ जताये

आत्म की आश वल्लभ जताये

पग की गति वल्लभ ढूँढे

पग का विराम वल्लभ नचाये

वल्लभ वल्लभ हर ओर वल्लभ

वल्लभ वल्लभ हर रीत वल्लभ

मेरे प्रिय प्रियतम वल्लभ

मेरे प्रिय वल्लभ ही वल्लभ

वल्लभ

श्री प्रभु ने तुरंत ही अपनी लीला जगायी, दौडके बहनजी के पास पहूँचे ऐसे वेश में और तुरंत ही बहनजी को कहा – हमें यहा के मुख्याजी को मिलना चाहते है, आप हमें मिला सकती हो ?

चोक्कस ! सहर्ष बहनजी ने उत्तर दिया ।

तो चलो !

''श्री प्रभु'' और बहनजी साथ साथ चलने लगे इतने में

''श्री प्रभु'' ने बहनजी को अपना हाथ पकडा दिया, बहनजी को स्पर्श होते ही बहनजी के तन मन में आनंद की उर्मि छा गई । उन्हें कुछ रोमांच होने लगा । वह तुरंत ही मुख्याजी की स्थली पर पहुँच कर मुख्याजी को भेट करा दी ।

जैसे उनके अधर से ऐसी गूँज निकली – मुख्याजी ! प्रणाम !

आप यहाँ के मुख्याजी हो

तो आप यहाँ की व्यवस्था, सर्वोच्चता क्यूँ प्रस्थापित नहीं करते ?

मुख्याजी ने आदर और सन्मान के साथ वह व्यक्ति और बहनजी को प्रणाम करते धैर्य से कहा – व्यवस्था और सर्वोच्चता के लिए ही हमनें यहाँ उत्तम प्रकार के सेवको को रखा है, पर यह लोगों को मुफ्त खाने, पीने और जीने की आदत सी हो गई है ।

यह कलियुग का प्रभाव है, हमारा भी तन मन विचलित हो जाता है, जो सदा श्री प्रभु के चरणों और सानिध्य में रहते हुए भी ।

वह व्यक्ति ने कहा – नहीं नहीं ! गलत बात न करो ।

जब श्री प्रभु तुम्हारी इच्छा अनुसार करते है तब कलियुग नहीं है,

जब खुद सत्य पहचान कर गलत करते हो तो कलियुग नहीं है और जब

खुद की इच्छा विरुद्ध हुआ तो कलियुग !

खुद किसीको घुमावो,

खुद किसीको लूटों

खुद किसीको तडपावो

खुद किसीका विश्वास तोडो

खुद संस्कार मर्यादा तोडो

तो कलियुग नहीं

पर कोई हमारे साथ ऐसा करे तो कलियुग !

मेरे मित्र ! आप यहाँ के मुख्याजी हो, आपही तो बहुत ही योग्य और शुद्ध चरित्र को घडने लायक योग्य व्यक्ति हो, आप ''श्री वल्लभ'' के हर पुष्टि सिद्धांत और पुष्टि जीवन शिक्षा के षोडश् ग्रंथ को शिष्टता योग्यता से सिंचित करो तो पवित्र परिवर्तन होगा ।

आप तो वल्लभ कुल शिरोमणि आचार्यश्री हो, आपको तो सर्वे प्रकार के ज्ञान और भाव शिक्षित हो, आप योग्यता से समाज को संस्कृत करो तो अवश्य समाज उत्कृष्ट होगा ।

मुख्याजी वह व्यक्ति की ओर तिरछी नजर से देखने लगे और कहा – हाँ ! हाँ ! हम समाज को योग्य पुष्टि सिद्धांत और पुष्टि प्रीत रीत से सिंचते है और उनके उद्धारण के लिए कहीं मनोरथ, उत्सव, सेवा, प्रवचन, सत्संग, विद्या, पाठशाला, संगठन संयोजित और आयोजित करते ही है, यह जीव तत्वों की दशा और दिशा परिवर्तन करने की कोशिश करते ही रहते है । पर यह

भौतिक समाज में आमूल परिवर्तन लाना मुश्किल भी है कठिन भी है ।

व्यक्ति ने कहा क्यूँ ऐसा ?

क्या आप जो सिद्धांत, सेवा, सत्संग, कथा, प्रवचन, मनोरथ, उत्सव आदि करते रहते हो उनमें आध्यात्मिकता और आत्मीयता श्री वल्लभ चारित्र्य प्रमाणित नहीं है ?

क्या आप जो स्वरुप की सेवा से प्रीति करते हो वह स्वरुप को समझें बिना और आत्मीय गौरव प्रीत ज्ञान भाव बिना सेवा कार्य और अपना जीवन जीते हो ?

व्यक्ति का तेज, मुखारविंद और कटाक्ष प्रश्नों से मुख्याजी अति व्याकुल और अस्त व्यस्त हो गये । वह गंभीरता से सोचने लगे,

यह व्यक्तित्व कौन है ?

उनके मुखारविंद पर इतना तेज और प्रचंड आवाज कैसी ?

मुख्याजी जागृत हो कर अपनी ऊंची आवाज से संस्कृत में सूत्र और श्लोक बोलने लगे, और ऐसे ऐसे दृष्टांत देने लगे, जिससे वह व्यक्ति और बहनजी प्रभावित हो जाये ।

पर वह व्यक्ति ने मुख्याजी को सरलता से कहा –

आप विवाद या विखवाद न करें, हम तो सरल और सीधे योग्य अक्षर और सूत्रों से सही समझा पा सकते है, तो आपको विनंती करते है की आप भी सरलता से हमें समझायें तो हम भी आपके साथ जुडकर आपके यथायोग्य साक्षर कार्य में हमारा सबका योगदान से हमारा सबका योग्यता पूर्वक शिक्षा सिंचन और समाज सुधार कर सकते है । तो आप ही हमें बताएं कि क्या करें और कैसे करें ?

मुख्याजी शांत और समझ गये की यह व्यक्ति की बात योग्य और सत्य सरल है ।

हमें योग्य सुधार करना ही अति आवश्यक है ।

उन्होंने तुरंत निर्णय किया की

सच ! मैं भी एक मनुष्य हूँ जैसे यह सब है, मैंने उच्च कुल में जन्म धारण किया है सर्वोच्च करने को और मैं एक सामान्य जीव भांति सबको घुमाता हूँ, लूटता हूँ, और भौतिकता इकठ्ठी करता हूँ, भविष्य की सलामती के लिए जो समाज के जीव तत्व मुझसे गरीब है, मुझसे अज्ञानी है, अति आवश्यकता में सदा जीते है।

मैं उनको ही बार बार येन केन प्रकार से माँग कर खुद को तवंगर करता हूँ। नहीं नहीं !

यह संपत्ति, यह मान मर्तबा, यह भौतिकता जो कभी पुष्टि मार्ग के अष्टसखा ने ठुकराये है तो मैं कौन ?

नहीं नहीं !

कैसी यह लालच !

कैसा यह मोह !

कैसा यह स्वार्थ !

कैसा यह लोभ !

कैसी यह विकृति !

कैसी यह विषय वासना !

कैसी यह ध्रुष्टता !

कैसा यह अज्ञान !

कैसा यह कुभाव !

कैसी यह असहिष्णुता !

मुझे जागना है

मुझे संवरना है

मुझे संभलना है

मुझे सत्य धरना है ।

वह व्यक्ति आनंदित हो गया और कहा

यही सत्य है ! यही शिव है ! यही सुंदर है !

यही मनुष्य जीवन का योग्य पुरुषार्थ है जो ''श्री वल्लभ'' ने सार्थक किया है ।

आज से मैं संकल्प करता हूँ

सदा पुष्टि प्रीत रीत सेवा सिद्धांत में हर क्षण व्यतित करुंगा

सदा पुष्टि सृष्टि सिध्धांत से तत्व तत्व, जीव-जीव, मानव-मानव, प्रकृति-प्रकृति में पुष्टि ज्योत प्रगटाऊँगा ।

धन्य है वह बहनजी

धन्य है वह मुख्याजी

धन्य है वह स्थली - नाथद्वारा

वाह ! मेरे श्री श्रीनाथजी ! वाह !

वाह ! मेरे श्री वल्लभ ! वाह !

वाह ! नाथद्वारा ! वाह !

दो ही नजर है चारों ओर यहां
एक श्री श्री नाथजी दूजी आभूषण चाय पर
नजर हटे दर्शन से
नजर पडे रबडी जलेबी पर
चाट पापडी भांग थंडाई
सिकंजी सोडा पानीपुरी
मन चटपट तन तलपापड
लपक लपक जीभ पटपटे
मनभावन हर स्वाद मिले
मिले रोग भरा हर व्यंजन
नाथद्वारा को भूख्खड करने
नाथ साथ बिसरा जाये
ऐसे मतवाले हम घुमने फिरने
पुष्टि श्री नाथ को लूटते जाये
नाथ ने नाथा काल यवन
नाथने नाथा काल
मेरा नाथ है जो नाग दमन है
मेरा नाथ है जो देव दमन है
मेरा नाथ है जो इन्द्र दमन है

क्या मेरा दोष न निवारेगा ?

क्या मेरा जन्म न संवारेगा ?

क्या मेरा तेरा मिलन न होगा ?

मंगल दर्शन से दोष मिटाया

गौचारण से जन्म संवारा

शयन आरती से मन मिलाया

नाथ मेरा श्री नाथ !

ऐसे ही रहना साथ

ऐसे ही पकडना हाथ

ऐसे ही तोडना जन्म गांठ

ऐसे ही शिखाना प्रीत अपरंपार

तेरे चरणों में है मेरा आधार

हम चल दिये अपनी राहों पर

श्रीनाथजी के स्पर्श के साथ

नयन में बसाया अंग अंग में समाया

साँस में बसाया रोम रोम में जगाया

पलकों से बुलाया होठों से बुलाया

तन मन के आनंद उमंग से बुलाया

कीर्तन से पुकारा डग डग से पुकारा

आरती की नर्तन ज्योति से पुकारा

विरह पावस बूँद से भिगोया

श्रमबिंदु पुरुषार्थ से भिगोया

चरण स्पर्श के संकेत से कहा

दंडवत प्रणाम विनंती से कहा

हे श्री नाथ ! सच में तु ही है मेरा साथ !

तुम से ही है मेरा जीवन आनंद

तुम से ही है मेरा जन्म बंधन

तु ही है मेरा जगत सहारा

तु ही है मेरा प्रियतम प्यारा

''निज मंदिर''

जहां से हर निज जन या हर निज जीव को मिलने की स्थली ।

जहां हर निज जन या हर निज जीव खुद का एकरार करे वह स्थली ।

जहां हर निज जन या हर निज जीव अपने तत्व का तनुनवत्व करे वह स्थली । जहां हर निज जन या हर निज जीव खुद को पहचान कर ब्रह्म से परब्रह्म में परिवर्तन हो वह स्थली ।

जहां हर निज जन या हर निज जीव की विरह वेदना संपूर्ण हो वह स्थली । जहां हर रीत, हर कला, हर अदा, हर स्पंदन जागता हो वह स्थली।

नाथद्वारा के नाथ की रीत है निराली
हर कोई को मिले दौड के मिले
मिले जैसे एक पतवारी
जीवन सागर की धारा पर करे नैया हमारी रखवाली
धरती परबत की रजों पर उगाये धान्य औषध संवारी
आकाश वायु की लहरों से साँस भरे जीवन प्राण चक्रधारी

कैसी लीला खेलन खेलें
हर रीत से प्रीत लूटाई

वाह मेरे श्री नाथ !
वाह मेरे जगन्नाथ !
वाह मेरे रंग नाथ !
वाह मेरे बद्रीनाथ !
नाथ से नाथीयों अविद्या नाथ
नाथ से सांधयों ब्रह्मांड नाद ।

''शय्या मंदिर''

पुष्टिमार्ग में शय्या मंदिर नाथद्वारा के लिए अनोखी रीत है, संध्या आरती तक नाथद्वारा में और शयन गिरिराज में ।

क्यूँकी श्री श्रीनाथजी का पार्दुभाव गिरिराज में हुआ था । जिससे वह हर शयन गिरिराज में करते है ।

गिरिराज जी का व्रज आने का रहस्य को सदा अलौकिक ऱखने वह यहाँ पधारते है ।

गिरिराज की धन्यता, गिरिराज की सामर्थ्यता, गिरिराज की सार्थकता, गिरिराज की सानिध्यता, गिरिराज की प्रीतता पाने याने भक्त वतस्लता और वात्सल्य पाने पधारते है । शय्या यह अर्थ सोने का साधन नहीं है, शय्या का अर्थ है जागृत रहना है । शय्या में भक्त के साथ आनंद लूटना और भक्त को आनंद में बढाना, एकात्म होना, भक्त के विषयों को हरना ।

माधुर्यता जगाना, मधुरता फैलाना, मोह माया को नष्ट करना ।

हम सोचे कि श्री प्रभु की नित्य क्रिया नाथद्वारा में और शयन गिरिराज में ! क्या रहस्य होगा ?

भक्त के आधिन है भगवंत

भक्त के प्रियतम है ! भगवंत !

भक्त के बिन अधूरे भगवंत !

''मणि कोठा'' मणि से भरपूर, कौन से मणि ? कैसे मणि ? जो सत्व गुणों से युक्त हो, जो सत सैद्धांतिक हो, जो समर्पित हो, जो सदा सम्मुख हो – वह मणि का समूह । जहां केवल परम भक्त, साथी, सखा बिराजते है, वह समूह को कोठा कहते है । जिससे श्री प्रभु सदा मुस्कराते रहते है ।

जहां प्रभु सदैव अपने अंश से बात करते रहते है,

खेल खेलते रहे है ।

''छठी घर'' यह स्थली निज मंदिर के आतंर भाग में रहती है, जो केवल प्रभु के निज क्रिया के लिए ही उपयोग में रहता है । जो जन्माष्टमी हो, निज भोग सामग्री हो, तब यह स्थली का उपयोग करते है । यह स्थली सदा श्री प्रभु के व्रज आत्मीय तत्वों के लिए ही है, यह स्थली श्री प्रभु को सदा व्रज की याद कराती है ।

''डोल तिवारी'' ओहहह ! क्या खूब कहूँ ! डोलना ही डोलना, झुमना ही घूमना, दौडना ही दौडना, मुस्कराना ही मुस्कराना, पुकारना ही पुकारना, नयन मटकना ही मटकना, धक्के खाना ही खाना, तडपना ही तडपना, आश रखना ही रखना, साँस भरना ही भरना, विरह जताना ही जताना !

क्या नहीं होता यह तिवारी पर !

यह स्थली सारे ब्रह्मांड की अनोखी स्थली है, यहां जगत के हर भाव प्रकट होते है, जागते है, तडपते है, मचलते है, बरसते है ।

यह स्थली पर पहुँचने के लिए जगत के हर जीव तत्व आतुर रहते है,

आश धरे बैठते है । जहां प्रीत की अखंडता उठती है, उडती है, गाती है, बरसती है, सँवरती है, स्वीकृत होती है, डूबती है ।

सच ! यह स्थली की रीत ही निराली है । लूटते है – लूटाते है – नचाते है, तडपते है – तडपाते है, न्योछावर होते है ।

जगत के हर रंग यहां से उडाते है, भक्त और भगवान यहां एक दूजे को अपने रंग में रंगते है । बिना रंगाये मैं तो घर नहीं जाऊँगा,

बित ही जाये मोरी उमरीयाँ, श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरीयाँ । यहां भक्त और भगवान एक हो जाते है ।

ओहहह ! कितनी सुमधुर स्थली !

निज मंदिर को छप्पर से इस तरह से बाँधा है कि पूरा ब्रह्मांड यहां से दिखता है, संचालित होता है, छूते है । यह छप्पर को मिट्टी के नलिये से ऐसे बाँधा है जो हर ऋतु का सिर और आनंद कराता है । छप्पर के उपर सुदर्शन जी बिराजते है और परमानंद स्तंभ पर प्रीतआनंद ध्वजाजी रंगो सभर लहरातें है, जो सदा ब्रह्मांड के हर तत्वों को धन्यता बिखरते है । सच ! कितना अलौकिक और अदभूत ! सृष्टि ने अपने हर प्रकार के धागों को गूंथ के सजाया है , सृजन किया है ।

''रतन चौक'' निज हवेली कहीं योग्यता सभर सृजन किया है । रतन चौक जो एसी स्थली है जो जगत की सर्वोच्चता का समूह को अपने साथ लेकर चलने वाले श्री प्रभु की कृपा और वात्सल्यता है । रतन चौक का सृजन यही आधार पर ही है । जैसे श्री प्रभु के शरणागत हो कर जब जीव तत्व तनुनवत्व पाता है जिससे उनमें परिवर्तन आता है और उन्हें रतन में परिवर्तन होने का संकेत मिलता है, यह संकेत कहता है कि अक्षर जो जीव खुद को जगत में पुरुषार्थ करके मेरे सानिध्य में आता है वह भक्त रतन में परिवर्तित हो कर सदा मेरे साथ रहता है । जगत के जितने भी ऐसे जीव तत्वों है वह सदैव यह रतन चौक में विराजमान है । जिसका स्पर्श करके हर दर्शनार्थी धन्यता पाते है ।

''कमल चौक''

खीले विशुद्ध पवित्र प्रीत पंकज, प्रकटे ज्योत अखंड गुण पुरुषार्थ ।

खीले विशुद्ध पवित्र प्रीत पंकज, प्रकटे अखंड गुण पुरुषार्थ ज्योत ।

नयन खुले मेरे नींद से

मैं वारी जाऊँ श्याम पर

पलक बंध मुखार विंद पर

मैं हारी जाऊँ घुंघराले केश पर

चीपक गुलाबी अधर पर

मैं सवारी जाऊँ अमृत चंदन पर

मधुर मुस्कान मुखडा पर

मैं लूट जाऊँ साँसें भर भर कर

कैसी रीति सजायी नटखट ने

मैं भीग जाऊँ प्रियतम जोगन बन कर

मुझे आना है कृष्ण के पास

एसे नहीं मिलते कृष्ण

वैसे नहीं मिलते कृष्ण

कृष्ण नहीं है ऐसे वैसे

जो मिले ऐसे जैसे

जो मिले जैसे वैसे

वो तो मिले ऐसे उन से

जो मिले उनके मन से

मन से मन को जोड दो उन से

अपने दिल को जोड दो उन से

ऐसी निराली प्रीत उनकी

हर घडी उन्हें मिलने को तरसे

ऐसे नहीं मिलते कृष्ण

वैसे नहीं मिलते कृष्ण

कृष्ण नहीं है ऐसे वैसे

जो मिले ऐसे जैसे

जो मिले जैसे वैसे

वो तो मिले ऐसे उन से

जो मिले उनके मन से

मन से मन को जोड दो उन से

अपने दिल को जोड दो उन से

ऐसी निराली प्रीत उनकी

हर घडी उन्हें मिलने को तरसे

''कमल चौक'' जो सदा महकता रहता है, जागता रहता है ।

यहां सदा युगल स्वरुप विराजमान रहता है, जैसा कमल खीलता है वैसे यहां हर जीव तत्व का आनंद खीलता है । यहां सदा पुष्टि रज बिखरती रहती है और श्री प्रभु सदा यह पद से सर्वे भक्तों को अपनी अनुभूति करवाते है, कहीं उत्सव, मनोरथ यहां होते है, सब आनंद उठाते है, लूटते है । जगत के हर क्षेत्र से जीव भँवर की तरह यहां आते है और कमल रज को छूते ही सदा उनका हो जाता है । कमल की रचना ही ऐसी है, हर पंखुडी एक विद्या है और यह विद्या से जागता ज्ञान श्री प्रभु के भक्ति स्वरुप में परिवर्तन हो कर वह जीव श्री प्रभु का हो जाता है ।

''कमल चौक' न की विशिष्टता कहीं है ।

कमल चौक में चारों ओर अनोखी सृजनात्मक संज्ञायें है, जो उन्हें देखते, स्पर्श करते ही प्रभु प्रीत खीलती है – अष्ट पटीयाँ और सोलह लहरीयाँ कमल के साथ ऐसी जुडी है जैसे गिरिराज के साथ भक्तों, जैसे तीतली के साथ भँवरे ।

यह अष्ट पटीयाँ अष्ट सखा है और यह सोलह लहरियाँ सोलह परम भक्त है – मीराबाई, नरसिंह मेहता, गंगाबाई, चैतन्य महाप्रभु ।

कमल चौक को गूंथा है – ध्रुव बारीने, सामवेद अथर्ववेद दो हाथी ने, दो हाथी के बीच का द्वार जो सूरज द्वार है – यहां पहले सदा अष्ट सखा या भक्त अपने श्री प्रभु से विरह बातें और भाव प्रकट करते रहते थे । यह द्वार अति तीव्रता भरा द्वार है ।

ध्रुव बारी – यह बारी का माहात्मय अति ज्ञान और भावसभर है, यह बारी इसलिए रखी है की अक्षर कोई जीव तत्व के संसार में कोई अस्पृस्य घटना घटी हो तो भी यह श्री प्रभु के दर्शन से वंचित न हो ।

कमल चौक चारों दिशाओं के द्वार से सजा है, यह चारों द्वार पुष्ट भक्ति की धारा लहराने का मार्ग है, जहां से पुष्टि उर्जा उठ कर चारों दिशाओं में बहती है ।

कमल चौक के एक एक द्वार के बाहर – कहीं प्रकार की सेवा प्रदान होती है–जैसे फल–फूल–पान की सेवा, दूध की सेवा, साग्सब्जी की सेवा, ऐसी कहीं प्रकार की सेवा सामग्री यहां रहती है ।

कमल चौक में १८ गवाक्ष है, जो यह सेवा सामग्री और प्रसाद बाँटने की वय्वस्था के लिए सुसज्जित है, श्री तुलसीजी का बिरवा जो सर्वे जीव तत्वों का सौभाग्य चिन्ह है । कमल चौक की अद्‌भूत विशेषता हिन्दू संस्कृति की अनोखी मिसाल है ।

प्रमुख द्वार

नाथद्वार के हर द्वार को पहचानना अति आवश्यक है,

क्यूँकि हर द्वार का माहात्मय ब्रह्मांड के द्वार जैसा है ।

नाथद्वारा के द्वार का तिलक लाल दरवाजा से होता है, विशाल, नयनरम्य, सुरक्षित, तेजोमय । मजबूत लकडे के साथ अनेक प्रकार के धातु मिश्रित शस्त्र सभर बाँधा है । बँध कर दिया तो न कोई भीतर आ सकता है, न कोई जा सकता है । न कोई मानव महेरामण जोर कर सकता है, न कोई पशु तोड सकता है ।

यह द्वार ''गोवर्धन द्वार'' है ।

जैसे गोवर्धन की तलहटी से गोवर्धन पहुँचते है वैसे ही यहाँ भी धीरे धीरे उपर चढते चढते हवेली द्वार पहुँचते है । जैसे द्वार देखते ही तन मन में कुछ अजीब सा लगने लगता है, नयन अपलक हो जाती है और मन दौडने लगता है, तन तडपने लगता है, साँसें तेज होने लगती है । द्वार के पास पहुँचते ही डग स्थिर हो जाते है और तन तुरंत झुक कर वंदन करता है । यहां कोई खिंचाव की अनुभूति होती है । तन मन के सारे स्पंदन ठहर जाते है और नयन स्थिर हो कर केवल और केवल हवेली पर स्थिर हो जाती है ।

कदम रुक जाते है, सारा जीवन, विचार, क्रिया और संस्कार का यहां आमूल परिवर्तन होते हैं ।

तन विशुद्ध, मन शांत, स्वभाव मुस्कराता हुआ और धर्म स्पर्शता हुआ

चारों ओर से पवित्र किया हुआ शरीर को निर्मल और विशुद्ध किये हुए तन मन आगे बढ़ने के लिए बेचैन होता है ।

गोवर्धन द्वार ने अपनी सेवा प्रारंभ कर दी, जो जीव तत्व उनसे भीतर से निकले वह जीव परिपूर्ण विशुद्ध हो जाता है ।

जिनका यह द्वार वह हर तरह से जीव को सर्वोच्च करके ही परम शुद्धि मार्ग पर गति कराता है । अदभूत ! अलौकिक !

''गोवर्धन द्वार'' से आगे....

ओहहह ! पीपल की छाँव ! कितनी सुहावनी, कितनी शीतल, कितनी मधुर लहर ! आहलादायक ! कुछ अद्वैत अनुभूति होने लगी, कुछ संकेत जागने लगे, एक एहसास जताने लगा कि यहां कुछ है और यहां कुछ हुआ था ! अनिश्चितता की सीमा अनगिनत प्रश्न लडखडाने लगे, तो सामने पाया एक संदेश ।

सबकुछ स्थिर हो गया, न इधर न उधर, न ऊपर न नीचे, न दाएँ न बाएँ, बस एक समाधि ! ओहहह ! मेरे प्रभु ! ओ मेरे श्रीनाथ ! क्या हो रहा है ? आंतर तन मन से आनंद की छडी उठने लगी, कैसी यह अट्टहेलियाँ !

कैसी यह रंग रेलियाँ,

कैसी यह उत्कृष्ट झडियाँ,

न कुछ काबू में,

सब कुछ गँवारा हो रहा था,

मन झूमता, तन घूमता,

मन मचलता, तन टहलता,

नयन पुकारते, होंठ गाते,

शब्द चिल्लाते, साँसें सीस्कारती !

वाह ! वाह ! वाह !

हममें पायी वह स्थली जहां श्री प्रभु के चरण अटके !

हमने पायी वह स्थली जहां श्री प्रभु के मुख मलके !

हमने पायी वह स्थली जहां श्री प्रभु के तन खीले !

हमने पायी वह स्थली जहां श्री प्रभु का मन बरसे !

श्री प्रभु का प्रथम चरण जहां रुके वहीं थंभ गये हमारा कदम । दंडवत प्रणाम किया – चरण रज स्पर्श पाया । गोवर्धन की ही महक, गोवर्धन की ही झलक । डग भरते भरते बढ रहेथे एक गूँज उठी –

हेएएएएएए ओएएएएएए ओंएएएएहहहहहहहा !

सूर की ओर नयन दौडे, एक झरुखें से एक गूँज बार बार उठती थी, जो गूँज से आकाश थंभ गया, धरा स्थिर हो गई, वायु रुक गया, पंछी वापस आ गए, जन जन उमंग के साथ एक दरवाजा की ओर दौडने लगे । एक विशाल – नक्कार खाना ।

एक तरफ महिला और एक तरफ पुरुष उतावले उतावले वो नक्कार खाना में जा रहे थे ।

जो गूँज उठी थी वह गूँज की असर इतनी तीव्र थी कि आसपास के जन जन दौड दौड कर आने लगे । यह कैसी रीत के उठी हुई गूँज सुन कर सब उमटने लगे ?

क्या है यह गूँज ? क्यूँ है यह गूँज ?

यह गूँज है श्री प्रभु की !

यह गूँज है श्री प्रभु के संकेत की !

यह गूँज है श्री प्रभु की विरह पुकार !

यह गूँज है श्री प्रभु के इंतजार की !

यह गूँज है प्रभु प्रीत की !

सारे जगत को पुकारते है, सारे संसार को पुकारते है, सारी सृष्टि को पुकारते है, सारी प्रकृति को पुकारते है, सारी दुनिया को पुकारते है । चारों ओर से सब नाचते, खुद के, दौडते आ रहे थे, सब को मिल के वह खुश ! सर्वत्र आनंद ही आनंद !

ददुंभी गूँज ने लगे, नगारा बजने लगे, शहनाई गाने लगी, मंजीरा छमकने लगे, घुघरीयाँ छन नन छन नन नाद करते लगी

कृष्ण कनैया लाल की जय ''

'' वल्लभाधिश की जय ''

'' श्री नाथजी बावा की जय ''

नक्कर खाना के नगारा ने पुष्टि सृष्टि का सर्जन कर दिया और सर्वत्रख जय जय कार होने लगी, पुष्टि सृष्टि से सर्वे जीवों का अंगीकार होने लगा और जीव तत्व पुष्टि तत्व मे रुपांतर होने लगे । ऐसी रचाही है सृष्टि नाथद्वारा में, ऐसी लगन जगती है नाथद्वारा में, ऐसी प्रकृति संस्कृत होती है नाथद्वारा में ।

वाह नाथद्धारा वाह !

दर्शन टहेल

सूचना
श्रीनाथजी मन्दिर परिसर में मोबाईल,
फोटो केमरा, विडियो केमरा, दुरबीन, हेड,
तुरा, किलंगी, चमडे का बेल्ट, हथियार,
ईलेक्ट्रोनिक्स वस्तु ईत्यादि
अन्दर ले जाना निषेध है
दर्शन
मन्दिर श्री श्रीनाथजी नाथद्वारा
दिनांक 26/4/2016
क्रम
नाम प्रातः काल दर्शन
समय दर्शन खुलनेका
१ मंगला 5-45 = 6-00
२ श्रृंगार 7-15 = 7-30
३ ग्वाल 9-15 = 9-30
४ राजभोग 11-15 = 11-30
नाम सायंकाल दर्शन
समय दर्शन खुलनेका
५ उत्थापन
६ भोग
७ आरती
शयन
प्रवेश महिलाएँ

प्रमुख द्वार सिपाई

नक्कार खााना से जैसे अंदर पहुँचते है एक विशाल चौक में प्रवेश होता है – ''गोवर्धन चौक'' गौवों की महक और गौवों का स्पर्श अपने आप यहां होता है, गौवें की भांभरने की आवाज सुनाई देती है, सच कहें तो यहां हर जीव तत्वों का परिवर्तन गौवें मे हो जाती है । सब जीवों अपने गोवर्धन की छाँव में प्रवेश करते है, सब जीवों अपने गोवर्धन की सानिध्य में बसते है ।

गोवर्धन–गोपाल–गोविंद–गौचारण सर्वत्र लीला यहां होती है । गोवर्धन चौक याने – गोवर्धन पूजा चौक । हवेली की प्राथमिक परिवर्थन स्थली – यहां आनेवाला हर जीव तत्व का परिवर्तन हो जाता है । यहां जो जो सेवा पूजा होती है वह हर संस्कार से सिद्ध होती है । यह स्थली पर जीव तत्व तो आकर्षित होते ही होते है पर परम आत्म तत्व भी यही परिवर्तित जीव तत्वों से आकर्षित होते है और एक दूजे में संयोजित होते है ।

गोवर्धन पूजा चौक का बंधारण कहीं सर्वोत्तम न्योछावर सेवा से होता है । यहां केवल रज की रज से यह स्थली की रचना हुई है, न पत्थर और न कोई नये प्रकार का साधन लगाया जाता है, यह स्थली को व्रज स्थली कहते है, हर जीव तत्वों की चरण रज यहां इकट्ठी होती है जो व्रज रज समान है ।

गोवर्धन पूजा चौक से ही परिवर्तित जीव तत्व सूरज पोल से श्री प्रभु के मिलने पहुँचते है, यह सूरज पोल द्वार है, सूरज पोल– जो द्वार को विरह द्वार भी कहते है, यहां विरह तडपता भी है और आनंद जगाता भी है ।

यह ऐसा द्वार है जो द्वार का स्पर्श और दर्शन की खेवना हर जीव तत्व करता है। यह द्वार के सानिध्य में कहीं भाव जागते है । जैसे भक्ति का किरण, ज्ञान का किरण, खुद की पहचान का किरण ऐसे कहीं किरण यहां उगते है इसलिए यह द्वार को सूरज पोल द्वार कहते है। यह द्वार पर गज राज सदैव अपनी सेवा में अविचल रहते है जो पधारे हुए हर जीव तत्व को अपनी स्थिरता और एकाग्रता का संदेश दे कर जीवन को दृढ करने को कहते रहते है ।

याने अपने स्वभाव और विषयों को अंकुश में रखने की संज्ञा देते है ।

कमल चौक के गवाक्ष के बायी ओर जो रास्ता है वह रास्ता हवेली का सर्वोत्तम रास्ता है, जो यह रास्ते से ही श्री प्रभु की प्रियतमा पधारती है, यह रास्ता अनोखा और अद्भूत था – क्या कहें!

यह गली थी न्यारी,
यहां की रीत थी निराली,
जो बहते थे विरह के आँसू,
जो धडकते थे दिल बे काबू,
जो डग भरते थे बिना धरती,
जो पुकारते थे अगन धरे होंठ,
जो बिखरते थे जूल्फों से सांये,
जो लड़खड़ाते लूटाते थे आँचल !

यह रास्ते के लिए तो श्री प्रभु भी तरसते रहते है, इंतजार करते रहते है,

बेकरार होते रहते है । यह रास्ता श्री प्रभु का प्रियतम रास्ता है, यह रास्ते के द्वार को प्रियतम द्वार कहते है ।

आज जहां जहां चाय और नास्ता मिलता है वहां पहले फूल बिखराते थे, रंग उडते थे, गुलाल पथराते थे, चुआ चंदन लहेराते थे। सच कहें तो हर तरह की शुद्धता और पवित्रता थी । आज.....आप सभी, हम सभी जानते है

क्या शुद्ध है ?

क्या पवित्र है ?

सेवा करने वाले भी नंगे तो मेवा खाने वाले भी नंगे ।

आज

मुझे समझना है सेवा,

मुझे समझना है सामग्री,

मुझे समझना है वस्त्र,

मुझे समझना है शृंगार,

मुझे समझना है भोग,

मुझे समझना है मनोरथ,

मुझे समझना है भेंट,

मुझे समझना है उत्सव,

मुझे समझना है प्रसाद,

मुझे समझना है न्योछावर,

मुझे समझना है दर्शन,

मुझे समझना है आरती,

मुझे समझना है अष्ट समा के दर्शन,

मुझे समझना है कंठी,

मुझे समझना है सम्मुख दर्शन,

मुझे समझना है जन्म बधाई,

मुझे समझना है केसर स्नान,

मुझे समझना है माला पहरामणी,

मुझे समझना है तिलक दर्शन,

मुझे समझना है सखडी भोग,

मुझे समझना है झारीजी,

मुझे समझना है चुंदडी मनोरथ,

मुझे समझना है दुग्ध स्नान,

मुझे समझना है धोती उपरणा,

मुझे समझना है अधरामृत प्रसाद,

मुझे समझना है गृह पधरामणी,

मुझे समझना है चरण स्पर्श,

मुझे समझना है चरण भेंट,

मुझे समझना है सेवकी,

मुझे समझना है पातल प्रसाद,

मुझे समझना है दान,

मुझे समझना है यात्रा,

मुझे समझना है परिक्रमा,

मुझे समझना है बैठकजी,

मुझे समझना है अपरस,

मुझे समझना है मर्यादा,

मुझे समझना है पुष्टि,

मुझे समझना है सेव्य स्वरुप,

मुझे समझना है निधि स्वरुप,

मुझे समझना है वल्लभ कुल,

मुझे समझना है गोलख,

मुझे समझना है गौ सेवा,

न लूटो ऐसे किसीको जो खुद लूट जाय

कंगाल हो कर दोनों भीख मांगे

धर्म अधर्म, अधर्म धर्म करि, विजय जो पाय ।

कर्म अकर्म, अकर्म कर्म करि,

शुद्धता जो पाय , नहीं है सुर, असुर ही समझना पाय ।

नहीं है विकर्मी, अकर्मी कहा जाय

ऐसे असुर, अकर्मी से कलयुग जागा जाय ।

द्विविध आंधरो जीवन जीता जाय ।

भग्न ह्रदय से नित्य स्पर्श से जैसे डग भरने लगे, इतने में एक तीव्र तीणा स्वर कर्ण से छू कर कह रहा था – न खेद पाओ हम सदैव आपके साथ रहते है । आकुल व्याकुल मेरा मन विचलित होता निश्वास निकाल रहा था, तब यह स्वर ने मुझे हिम्मत दी, मैं, वह स्वर को छू कर आगे बढ़ रहा था तो सामने पाया एक सीडी जो सीडी व ह स्वर की गूँज के पास ले जा रही थी । जैसे सीडी खत्म हुई तो सामने था – ''सुदर्शन चक्र'' । वह स्वर अन्न से प्रकट हो रहा था । यह सुदर्शन चक्र इतना अद्‌भूत और तीव्र था कि मैं अपना सर्व भूल कर उनके सानिध्य में आनंद से बैठा दिया था ।

यह चक्र से निकलता तेज मेरे हर मन भावन वर्ग को नष्ट कर दिया था, मैं अति खुश था । बार बार प्रणाम करते करते मेरा रोम रोम से विषय वासना को काट रहे थे ।

एंत हो ने के लिए मैंने प्रार्थना है कि और वह चक्र मेरी आसपास घूमने लगा । वह मेरा संरक्षण और संवर्धन करने लगा ।

यह सुदर्शन चक्र का निरीक्षण करते करते समझ पाया यह यंत्र क्या है ? क्यूँ है ?

यकचक्र श्री आचार्यजी को प्राप्त हुआ था एक सिद्ध पुरुष से जो सदा ज्ञान की गंगा बहाता था और पहचानता था कि यह चक्र यही परम तत्व का ही है । जो सदा धर्म की सेवा और रक्षा करता रहता है ।

ऐसा है मेरा नाथ का द्वार
ऐसा है मेरा नाथ का शृंगार
ऐसा है मेरा नाथ का बसेरा
ऐसा है मेरा नाथ का कर्तव्य
ऐसा है मेरा नाथ का सामिप्य
ऐसा है मेरा नाथ का सानिध्य

ऐसा है मेरा नाथ का स्पर्श

ऐसा है मेरा नाथ का प्रसाद

ऐसा है मेरा नाथ का दर्शन

ऐसा है मेरा नाथ का प्रमाण

ऐसा है मेरा नाथ का परिश्रम

ऐसा है मेरा नाथ का सखाभाव

ऐसा है मेरा नाथ का पुष्टिप्रभाव

ऐसी है मेरा नाथ की पुकार

ऐसी है मेरा नाथ की आरती

ऐसी है मेरा नाथ की प्रकृति

ऐसी है मेरा नाथ की सृष्टि

ऐसी है मेरा नाथ की कृति

ऐसी है मेरा नाथ की प्रीति

ऐसी है मेरा नाथ की पृष्टि

ऐसी है मेरा नाथ की सेवा

ऐसे है मेरा नाथ के अष्ट सखा

ऐसे है मेरा नाथ का अष्ट याम

ऐसे है मेरा नाथ की अष्ट क्षमा

आओ हम सब मिलके ''श्री श्रीनाथजी'' और उनकी पुरुषोत्तम स्थली नाथद्वारा को प्रणाम करे, वंदन करे, दंडवत करे, नमन करे.

''जयश्री कृष्ण''

''जय जय श्री नाथ''

''जय श्रीनाथ द्वार''